ایاتها ۷۳ | ۳۳ سُوْرَۃُ الْاَحْزَابِ مَدَنِیَّۃٌ ۹۰ | رکوعاتها ۹

सूरए अह़्ज़ाब मदनिय्या है, इस में तिहत्तर आयतें और नव रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेह्रबान रह़्म वाला[1]

يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ اتَّقِ اللّٰهَ وَلَا تُطِعِ الْكٰفِرِيْنَ وَالْمُنٰفِقِيْنَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ

ऐ ग़ैब की ख़बरें बताने वाले (नबी)[2] **अल्लाह** का यूं ही ख़ौफ़ रखना और काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों की न सुनना[3] बेशक **अल्लाह**

عَلِيْمًا حَكِيْمًا ۙ﴿۱﴾ وَّاتَّبِعْ مَا يُوْحٰۤى اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ

इल्मो ह़िक्मत वाला है और उस की पैरवी रखना जो तुम्हारे रब की त़रफ़ से तुम्हें वह़्य होती है ऐ लोगो **अल्लाह**

بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرًا ۙ﴿۲﴾ وَّتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ ؕ وَكَفٰى بِاللّٰهِ وَكِيْلًا ﴿۳﴾ مَا

तुम्हारे काम देख रहा है और ऐ मह़बूब तुम **अल्लाह** पर भरोसा रखो और **अल्लाह** बस (काफ़ी) है काम बनाने वाला

جَعَلَ اللّٰهُ لِرَجُلٍ مِّنْ قَلْبَيْنِ فِيْ جَوْفِهٖ ۚ وَمَا جَعَلَ اَزْوَاجَكُمُ الّٰٓـِٔيْ

अल्लाह ने किसी आदमी के अन्दर दो दिल न रखे[4] और तुम्हारी उन औ़रतों को जिन्हें तुम मां के बराबर

येह सूरत और सूरए "تَبٰرَکَ الَّذِیْ بِیَدِهِ الْمُلْکُ" पढ़ न लेते ख़्वाब (नींद) न फ़रमाते। ह़ज़रते इब्ने मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया कि सूरए सज्दह अ़ज़ाबे क़ब्र से मह़फ़ूज़ रखती है। (خازن ومدارک) **1 :** सूरए अह़्ज़ाब मदनिय्या है। इस में नव रुकूअ़, तिहत्तर आयतें और एक हज़ार दो सो अस्सी कलिमे और पांच हज़ार सात सो नव्वे ह़र्फ़ हैं। **2 :** या'नी हमारी त़रफ़ से ख़बरें देने वाले, हमारे असरार के अमीन, हमारा ख़ित़ाब हमारे प्यारे बन्दों को पहुंचाने वाले। **अल्लाह** तआ़ला ने अपने ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم को يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ के साथ ख़ित़ाब फ़रमाया जिस के येह मा'ना हैं जो ज़िक्र किये गए। नामे पाक के साथ या मुह़म्मद ! ज़िक्र फ़रमा कर ख़ित़ाब न किया जैसा कि दूसरे अम्बिया عَلَیْہِمُ السَّلَام को ख़ित़ाब फ़रमाया है। इस से मक़्सूद आप की तक्रीम और आप का एह़तिराम और आप की फ़ज़ीलत का ज़ाहिर करना है। (مدارک) **3 शाने नुज़ूल :** अबू सुफ़्यान बिन ह़र्ब और इ़क्रिमा बिन अबी जह्ल और अबुल आ'वर सुलमी जंगे उह़ुद के बा'द मदीनए त़य्यिबा में आए और मुनाफ़िक़ीन के सरदार अ़ब्दुल्लाह बिन उबय बिन सलूल के यहां मुक़ीम हुए। सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم से गुफ़्त्गू के लिये अमान ह़ासिल कर के उन्हों ने येह कहा कि आप लात, उ़ज़्ज़ा, मनात वग़ैरा बुतों को जिन्हें मुश्रिकीन अपना मा'बूद समझते हैं कुछ न फ़रमाइये और येह फ़रमा दीजिये कि इन की शफ़ाअ़त इन के पुजारियों के लिये है और हम लोग आप को और आप के रब को कुछ न कहेंगे। सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم को उन की येह गुफ़्त्गू बहुत ना गवार हुई और मुसल्मानों ने उन के क़त्ल का इरादा किया, सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم ने क़त्ल की इजाज़त न दी और फ़रमाया कि मैं इन्हें अमान दे चुका हूं इस लिये क़त्ल न करो, मदीने शरीफ़ से निकाल दो। चुनान्चे ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने निकाल दिया, इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई, इस में ख़ित़ाब तो सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم के साथ है और मक़्सूद है आप की उम्मत से फ़रमाना कि जब नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने अमान दी तो तुम उस के पाबन्द रहो और नक़्ज़े अ़ह्द (अ़ह्द तोड़ने) का इरादा न करो और कुफ़्फ़ार व मुनाफ़िक़ीन की ख़िलाफ़े शर्अ़ बात न मानो। **4 :** कि एक में **अल्लाह** का ख़ौफ़ हो दूसरे में किसी और का, जब एक ही दिल है तो **अल्लाह** ही से डरे। **शाने नुज़ूल :** अबू मा'मर हुमैद फ़िह्री की याद दाश्त अच्छी थी जो सुनता था याद कर लेता था। क़ुरैश ने कहा कि इस के दो दिल हैं जभी तो इस का ह़ाफ़िज़ा इतना क़वी है। वोह ख़ुद भी कहता था कि इस के दो दिल हैं और हर एक में ह़ज़रते सय्यिद आ़लम (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) से ज़ियादा दानिश है। जब बद्र में मुश्रिक भागे तो अबू मा'मर इस शान से भागा कि एक जूती हाथ में, एक पाउं में। अबू सुफ़्यान से मुलाक़ात हुई तो अबू सुफ़्यान ने पूछा : क्या ह़ाल है ? कहा : लोग भाग गए। तो अबू सुफ़्यान ने पूछा : एक जूती हाथ में एक पाउं में क्यूं है ? कहा : इस की मुझे ख़बर नहीं मैं तो येही समझ रहा हूं कि दोनों जूतियां पाउं में हैं। उस वक़्त क़ुरैश को मा'लूम हुवा कि दो दिल होते तो जूती जो हाथ में लिये हुए था भूल न जाता। और एक क़ौल येह भी है कि मुनाफ़िक़ीन सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم के लिये

www.dawateislami.net

تُظٰهِرُوْنَ مِنْهُنَّ اُمَّهٰتِكُمْ ۚ وَمَا جَعَلَ اَدْعِيَآءَكُمْ اَبْنَآءَكُمْ ؕ ذٰلِكُمْ

कह दो तुम्हारी मां न बनाया[5] और न तुम्हारे ले पालकों को तुम्हारा बेटा बनाया[6] येह

قَوْلُكُمْ بِاَفْوَاهِكُمْ ؕ وَاللّٰهُ يَقُوْلُ الْحَقَّ وَهُوَ يَهْدِي السَّبِيْلَ ﴿۴﴾

तुम्हारे अपने मुंह का कहना है[7] और **अल्लाह** ह़क़ फ़रमाता है और वोही राह दिखाता है[8]

اُدْعُوْهُمْ لِاٰبَآئِهِمْ هُوَ اَقْسَطُ عِنْدَ اللّٰهِ ۚ فَاِنْ لَّمْ تَعْلَمُوْۤا اٰبَآءَهُمْ

उन्हें उन के बाप ही का कह कर पुकारो[9] येह **अल्लाह** के नज़्दीक ज़ियादा ठीक है फिर अगर तुम्हें उन के बाप मा'लूम न हों[10]

فَاِخْوَانُكُمْ فِي الدِّيْنِ وَمَوَالِيْكُمْ ؕ وَلَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ فِيْمَاۤ اَخْطَاْتُمْ

तो दीन में तुम्हारे भाई हैं और बशरिय्यत में तुम्हारे चचाज़ाद[11] और तुम पर उस में कुछ गुनाह नहीं जो ना दानिस्ता तुम से सादिर

بِهٖ ۙ وَلٰكِنْ مَّا تَعَمَّدَتْ قُلُوْبُكُمْ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿۵﴾

हुवा[12] हां वोह गुनाह है जो दिल के क़स्द से करो[13] और **अल्लाह** बख़्शने वाला मेहरबान है

اَلنَّبِيُّ اَوْلٰى بِالْمُؤْمِنِيْنَ مِنْ اَنْفُسِهِمْ وَاَزْوَاجُهٗۤ اُمَّهٰتُهُمْ ؕ وَاُولُوا

येह नबी मुसल्मानों का उन की जान से ज़ियादा मालिक है[14] और उस की बीबियां उन की माएं हैं[15] और रिश्ते

दो दिल बताते और कहते थे कि इन का एक दिल हमारे साथ है और एक अपने अस्ह़ाब के साथ। नीज़ ज़मानए जाहिलिय्यत में जब कोई अपनी औ़रत से ज़िहार करता था तो लोग उस ज़िहार को त़लाक़ कहते और उस औ़रत को उस की मां क़रार देते थे और जब कोई शख़्स किसी को बेटा कह देता तो उस को ह़क़ीक़ी बेटा क़रार दे कर शरीके मीरास ठहराते और उस की ज़ौजा को बेटा कहने वाले के लिये सुल्बी बेटे की बीबी की त़रह़ ह़राम जानते, इन सब के रद में येह आयत नाज़िल हुई। **5 :** या'नी ज़िहार से औ़रत मां के मिस्ल ह़राम नहीं हो जाती। **ज़िहार :** मन्कूह़ा को ऐसी औ़रत से तश्बीह देना जो हमेशा के लिये ह़राम हो और येह तश्बीह ऐसे उ़ज़्व में हो जिस को देखना और छूना जाइज़ नहीं है। मसलन किसी ने अपनी बीबी से येह कहा कि तू मुझ पर मेरी मां की पीठ या पेट के मिस्ल है तो वोह मुज़ाहिर हो गया। **मस्अला :** ज़िहार से निकाह़ बात़िल नहीं होता लेकिन कफ़्फ़ारा अदा करना लाज़िम हो जाता है और कफ़्फ़ारा अदा करने से पहले औ़रत से अ़लाह़दा रहना और उस से तमत्तोअ़ न करना लाज़िम है। **मस्अला :** ज़िहार का कफ़्फ़ारा एक गुलाम का आज़ाद करना और येह मुयस्सर न हो तो मुतवातिर दो महीने के **रोजे़** और येह भी न हो सके तो **साठ मिस्कीनों** को खाना खिलाना है। **मस्अला :** कफ़्फ़ारा अदा करने के बा'द औ़रत से कुर्बत और तमत्तोअ़ ह़लाल हो जाता है। (ہدایہ) **6 :** ख़्वाह उन्हें लोग तुम्हारा बेटा कहते हों। **7 :** या'नी बीबी को मां के मिस्ल कहना और ले पालक को बेटा कहना बे ह़क़ीक़त बात है, न बीबी मां हो सकती है न दूसरे का "फ़रज़न्द" अपना बेटा। नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने जब ह़ज़रते ज़ैनब बिन्ते जह़्श से निकाह़ किया तो यहूद व मुनाफ़िक़ीन ने ज़बाने त़ा'न खोली और कहा कि (ह़ज़रत) मुह़म्मद (मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) ने अपने बेटे ज़ैद की बीबी से शादी कर ली। क्यूं कि पहले ह़ज़रते ज़ैनब ज़ैद के निकाह़ में थीं और ह़ज़रते ज़ैद उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते ख़दीजा رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا के ज़र ख़रीद थे। इन्हों ने ह़ज़रते सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की ख़िदमत में उन्हें हिबा कर दिया, हुज़ूर ने उन्हें आज़ाद कर दिया तब भी वोह अपने बाप के पास न गए हुज़ूर ही की ख़िदमत में रहे, हुज़ूर उन पर शफ़्क़त व करम फ़रमाते थे इस लिये लोग उन्हें हुज़ूर का फ़रज़न्द कहने लगे। इस से वोह ह़क़ीक़तन हुज़ूर के बेटे न हो गए और यहूद व मुनाफ़िक़ीन का त़ा'ना मह़ज़ ग़लत़ और बे जा हुवा। **अल्लाह** तआ़ला ने यहां उन त़ाइनीन (त़ा'ना देने वालों) की तक्ज़ीब फ़रमाई और उन्हें झूटा क़रार दिया। **8 :** ह़क़ की। लिहाज़ा ले पालकों को उन के पालने वालों का बेटा न ठहराओ बल्कि **9 :** जिन से वोह पैदा हुए। **10 :** और इस वज्ह से तुम उन्हें उन के बापों की त़रफ़ निस्बत न कर सको **11 :** तो तुम उन्हें भाई कहो और जिस के ले पालक हैं उस का बेटा न कहो। **12 :** मुमानअ़त से पहले। या येह मा'ना हैं कि अगर तुम ने ले पालकों को ख़त़ाअन बे इरादा उन के परवरिश करने वालों का बेटा कह दिया या किसी ग़ैर की औलाद को मह़ज़ ज़बान की सब्क़त से बेटा कहा तो इन सूरतों में गुनाह नहीं। **13 :** मुमानअ़त के बा'द। **14 :** दुन्या व दीन के तमाम उमूर में और नबी का हुक्म उन पर नाफ़िज़ और नबी की

www.dawateislami.net

الْاَرْحَامِ بَعْضُهُمْ اَوْلٰى بِبَعْضٍ فِىْ كِتٰبِ اللّٰهِ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ وَ

वाले **अल्लाह** की किताब में एक दूसरे से ज़ियादा क़रीब हैं[16] ब निस्बत और मुसल्मानों और

الْمُهٰجِرِيْنَ اِلَّاۤ اَنْ تَفْعَلُوْۤا اِلٰۤى اَوْلِيٰٓئِكُمْ مَّعْرُوْفًا ؕ كَانَ ذٰلِكَ فِى

मुहाजिरों के[17] मगर येह कि तुम अपने दोस्तों पर कोई एह्सान करो[18] येह किताब

الْكِتٰبِ مَسْطُوْرًا ﴿۶﴾ وَاِذْ اَخَذْنَا مِنَ النَّبِيّٖنَ مِيْثَاقَهُمْ وَمِنْكَ وَ

में लिखा है[19] और ऐ महबूब याद करो जब हम ने नबियों से अ़हद लिया[20] और तुम से[21] और

مِنْ نُّوْحٍ وَّ اِبْرٰهِيْمَ وَمُوْسٰى وَعِيْسَى ابْنِ مَرْيَمَ ۪ وَاَخَذْنَا مِنْهُمْ

नूह और इब्राहीम और मूसा और ईसा बिन मरयम से और हम ने उन से

مِّيْثَاقًا غَلِيْظًا ۙ﴿۷﴾ لِّيَسْـَٔلَ الصّٰدِقِيْنَ عَنْ صِدْقِهِمْ ۚ وَاَعَدَّ لِلْكٰفِرِيْنَ

गाढ़ा अ़हद लिया ताकि सच्चों से[22] उन के सच का सुवाल करे[23] और उस ने काफ़िरों के लिये दर्दनाक

ع ٨ ١٧ عَذَابًا اَلِيْمًا ﴿۸﴾ ع يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اذْكُرُوْا نِعْمَةَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ اِذْ

अ़ज़ाब तय्यार कर रखा है ऐ ईमान वालो ! **अल्लाह** का एह्सान अपने ऊपर याद करो[24] जब

جَآءَتْكُمْ جُنُوْدٌ فَاَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيْحًا وَّجُنُوْدًا لَّمْ تَرَوْهَا ؕ وَكَانَ

तुम पर कुछ लश्कर आए[25] तो हम ने उन पर आंधी और वोह लश्कर भेजे जो तुम्हें नज़र न आए[26] और

ताअ़त वाजिब और नबी के हुक्म के मुक़ाबिल नफ़्स की ख़्वाहिश वाजिबुत्तर्क। या येह मा'ना हैं कि नबी मोमिनीन पर उन की जानों से ज़ियादा राफ़्तो रह्मत और लुत्फ़ो करम फ़रमाते हैं और नाफ़ेअ़ तर हैं। बुख़ारी व मुस्लिम की ह़दीस है : सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : हर मोमिन के लिये दुन्या व आख़िरत में मैं सब से ज़ियादा औला हूं अगर चाहो तो येह आयत पढ़ो ''اَلنَّبِيُّ اَوْلٰى بِالْمُؤْمِنِيْنَ''। ह़ज़रते इब्ने मस्ऊ़द رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه की क़िराअत में ''مِنْ اَنْفُسِهِمْ'' के बा'द ''وَهُوَ اَبٌ لَّهُمْ'' भी है। मुजाहिद ने कहा कि तमाम अम्बिया अपनी उम्मत के बाप होते हैं और इसी रिश्ते से मुसल्मान आपस में भाई कहलाते हैं कि वोह अपने नबी की दीनी औलाद हैं। **15 :** ता'ज़ीमे ह़ुरमत में और निकाह़ के हमेशा के लिये ह़राम होने में और इस के इलावा दूसरे अह्काम में मिस्ले विरासत और पर्दा वग़ैरा के उन का वोही हुक्म है जो अजनबी औ़रतों का। और इन की बेटियों को मोमिनीन की बहनें और इन के भाइयों और बहनों को मोमिनीन के मामूं ख़ाला न कहा जाएगा। **16 :** तवारुस में **17** **मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि ''اُولِى الْاَرْحَام'' एक दूसरे के वारिस होते हैं, कोई अजनबी दीनी बिरादरी के ज़रीए से वारिस नहीं होता **18 :** इस त़रह़ कि जिस के लिये चाहो कुछ वसिय्यत करो तो वसिय्यत सुलुस माल के क़द्र में तवारुस पर मुक़द्दम की जाएगी। **ख़ुलासा** येह है कि अव्वल माल ज़विल फ़ुरूज़ को दिया जाएगा फिर अ़सबात को फिर नसबी ज़विल फ़ुरूज़ पर रद किया जाएगा फिर ज़विल अरह़ाम को दिया जावेगा फिर मौलल मुवालात को (تفسیر احمدی) **19 :** या'नी लौह़े मह़फ़ूज़ में। **20 :** रिसालत की तब्लीग़ और दीने ह़क़ की दा'वत देने का **21 :** ख़ुसूसिय्यत के साथ। **मस्अला :** सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم का ज़िक्र दूसरे अम्बिया पर मुक़द्दम करना उन सब पर आप की अफ़्ज़लिय्यत के इज़्हार के लिये है। **22 :** या'नी अम्बिया से या उन की तस्दीक़ करने वालों से **23 :** या'नी जो उन्हों ने अपनी क़ौम से फ़रमाया और उन्हें तब्लीग़ की वोह दरयाफ़्त फ़रमाए या मोमिनीन से उन की तस्दीक़ का सुवाल करे या येह मा'ना हैं कि अम्बिया को जो उन की उम्मतों ने जवाब दिये वोह दरयाफ़्त फ़रमाए और इस सुवाल से मक़्सूद कुफ़्फ़ार की तज़्लील व तब्कीत है। **24 :** जो उस ने जंगे अह़ज़ाब के दिन फ़रमाया जिस को ग़ज़्वए ख़न्दक़ कहते हैं जो जंगे उह़ुद से एक साल बा'द था, जब कि मुसल्मानों का नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के साथ मदीनए त़य्यिबा में मुह़ासरा कर लिया गया था। **25 :** क़ुरैश और ग़त़फ़ान और यहूदे क़ुरैज़ा व नज़ीर के **26 :** या'नी मलाएका के लश्कर।

www.dawateislami.net

اللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرًا ۟ۚ ﴿٩﴾ اِذْ جَآءُوْكُمْ مِّنْ فَوْقِكُمْ وَ مِنْ اَسْفَلَ

अल्लाह तुम्हारे काम देखता है[27] जब काफ़िर तुम पर आए तुम्हारे ऊपर से और तुम्हारे नीचे

مِنْكُمْ وَ اِذْ زَاغَتِ الْاَبْصَارُ وَ بَلَغَتِ الْقُلُوْبُ الْحَنَاجِرَ وَ تَظُنُّوْنَ بِاللّٰهِ

से[28] और जब कि ठिटक कर रह गईं निगाहें[29] और दिल गलों के पास आ गए[30] और तुम अल्लाह पर तरह तरह के

الظُّنُوْنَا ۟ؕ ﴿١٠﴾ هُنَالِكَ ابْتُلِيَ الْمُؤْمِنُوْنَ وَ زُلْزِلُوْا زِلْزَالًا شَدِيْدًا ۟ ﴿١١﴾ وَ

गुमान करने लगे[31] वोह जगह थी कि मुसल्मानों की जांच हुई[32] और ख़ूब सख़्ती से झंझोड़े गए और

ग़ज़्वए अह़ज़ाब का मुख़्तसर बयान : येह ग़ज़्वा शव्वाल 4 या 5 सिने हिजरी में पेश आया। जब यहूदे बनी नज़ीर को जिला वत़न किया गया तो उन के अकाबिर मक्कए मुकर्रमा में क़ुरैश के पास पहुंचे और उन्हें सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के साथ जंग की तरग़ीब दिलाई और वा'दा किया कि हम तुम्हारा साथ देंगे यहां तक कि मुसल्मान नेस्तो नाबूद हो जाएं, अबू सुफ़्यान ने इस तह़रीक की बहुत क़द्र की और कहा कि हमें दुन्या में वोह सब से प्यारा है जो मुह़म्मद (मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) की अ़दावत में हमारा साथ दे। फिर क़ुरैश ने उन यहूदियों से कहा कि तुम पहली किताब वाले हो बताओ तो हम ह़क़ पर हैं या मुह़म्मद (मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) ? यहूद ने कहा तुम्हीं ह़क़ पर हो। इस पर क़ुरैश ख़ुश हुए, इसी पर आयत ''اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ اُوْتُوْا نَصِيْبًا مِّنَ الْكِتٰبِ يُؤْمِنُوْنَ بِالْجِبْتِ وَالطَّاغُوْتِ'' नाज़िल हुई। फिर यहूदी क़बाइल ग़त़फ़ान व क़ैस व ग़ीलान वग़ैरा में गए वहां भी येही तह़रीक की वोह सब इन के मुवाफ़िक़ हो गए। इस त़रह़ इन्हों ने जा बजा दौरे किये और अ़रब के क़बीले क़बीले को मुसल्मानों के ख़िलाफ़ तय्यार कर लिया। जब सब लोग तय्यार हो गए तो क़बीलए ख़ुज़ाआ़ के चन्द लोगों ने सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को कुफ़्फ़ार की इन ज़बर दस्त तय्यारियों की इत्तिलाअ़ दी। येह इत्तिलाअ़ पाते ही हुज़ूर ने ब मश्वरा ह़ज़रते सलमान फ़ारसी رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ख़न्दक़ खुदवानी शुरूअ़ कर दी, उस ख़न्दक़ में मुसल्मानों के साथ सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने ख़ुद भी काम किया। मुसल्मान ख़न्दक़ तय्यार कर के फ़ारिग़ हुए ही थे कि मुश्रिकीन बारह हज़ार का लश्करे गिरां ले कर इन पर टूट पड़े और मदीनए त़य्यिबा का मुह़ासरा कर लिया। ख़न्दक़ मुसल्मानों के और उन के दरमियान ह़ाइल थी उस को देख कर मुतह़य्यिर हुए और कहने लगे कि येह ऐसी तदबीर है जिस से अ़रब लोग अब तक वाक़िफ़ न थे। अब उन्हों ने मुसल्मानों पर तीर अन्दाज़ी शुरूअ़ की और इस मुह़ासरे को पन्दरह रोज़ या चौबीस रोज़ गुज़रे मुसल्मानों पर ख़ौफ़ ग़ालिब हुवा और वोह बहुत घबराए और परेशान हुए तो अल्लाह तआ़ला ने मदद फ़रमाई और उन पर तेज़ हवा भेजी निहायत सर्द और अंधेरी रात में उस हवा ने उन के ख़ैमे गिरा दिये, त़नाबें तोड़ दीं, खूंटे उखाड़ दिये, हांडियां उलट दीं, आदमी ज़मीन पर गिरने लगे और अल्लाह तआ़ला ने फ़िरिश्ते भेज दिये जिन्हों ने कुफ़्फ़ार को लरज़ा दिया, उन के दिलों में दहशत डाल दी, मगर इस जंग में मलाएका ने क़िताल नहीं किया। फिर रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने हुज़ैफ़ा बिन यमान को ख़बर लेने के लिये भेजा, वक़्त निहायत सर्द था येह हथियार लगा कर रवाना हुए। हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने रवाना होते वक़्त उन के चेहरे और बदन पर दस्ते मुबारक फेरा जिस से उन पर सरदी असर न कर सकी और येह दुश्मन के लश्कर में पहुंच गए। वहां तेज़ हवा चल रही थी और संगरेज़े उड़ उड़ कर लोगों के लग रहे थे, आंखों में गर्द पड़ रही थी, अ़जब परेशानी का आ़लम था, लश्करे कुफ़्फ़ार के सरदार अबू सुफ़्यान हवा का येह आ़लम देख कर उठे और उन्हों ने क़ुरैश को पुकार कर कहा कि जासूसों से होशियार रहना हर शख़्स अपने बराबर वाले को देख ले। येह ए'लान होने के बा'द हर एक शख़्स ने अपने बराबर वाले को टटोलना शुरूअ़ किया, ह़ज़रते हुज़ैफ़ा ने दानाई से अपने दाहने शख़्स का हाथ पकड़ कर पूछा तू कौन है ? उस ने कहा मैं फुलां बिन फुलां हूं। इस के बा'द अबू सुफ़्यान ने कहा : ऐ गुरौहे क़ुरैश तुम ठहरने के मक़ाम पर नहीं हो, घोड़े और ऊंट हलाक हो चुके, बनी क़ुरैज़ा अपने अ़ह्द से फिर गए और हमें उन की त़रफ़ से अन्देशा नाक ख़बरें पहुंची हैं, हवा ने जो ह़ाल किया है वोह तुम देख ही रहे हो, बस अब यहां से कूच कर दो मैं कूच करता हूं। अबू सुफ़्यान येह कह कर अपनी ऊंटनी पर सुवार हो गए और लश्कर में अर्रह़ील अर्रह़ील या'नी कूच कूच का शोर मच गया, हवा हर चीज़ को उलटे डालती थी मगर येह हवा उस लश्कर से बाहर न थी। अब येह लश्कर भाग निकला और सामान का बार कर के ले जाना उस को शाक़ (मुश्किल) हो गया इस लिये कसीर सामान छोड़ गया। (جمل) **27 :** या'नी तुम्हारा ख़न्दक़ खोदना और नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की फ़रमां बरदारी में साबित क़दम रहना। **28 :** या'नी वादी की बालाई जानिब मशरिक़ से क़बीलए असद व ग़त़फ़ान के लोग मालिक बिन औ़फ़ नस्री व उ़यैना बिन ह़सन फ़ज़ारी की सरकर्दगी में एक हज़ार की जम्इय्यत ले कर और उन के साथ तुलैह़ा बिन ख़ुवैलिद असदी बनी असद की जम्इय्यत ले कर और हुय्य बिन अख़्त़ब यहूदे बनी क़ुरैज़ा की जम्इय्यत ले कर और वादी की ज़ेरीं जानिब मग़रिब से क़ुरैश और किनाना ब सरकर्दगी अबू सुफ़्यान बिन ह़र्ब। **29 :** और शिद्दते रो'ब व हैबत से ह़ैरत में आ गईं **30 :** ख़ौफ़ व इज़्तिराब इन्तिहा को पहुंच गया **31 :** मुनाफ़िक़ तो येह गुमान करने लगे कि मुसल्मानों का नामो निशान बाक़ी न रहेगा, कुफ़्फ़ार की इतनी बड़ी जम्इय्यत सब को फ़ना कर डालेगी और मुसल्मानों को अल्लाह तआ़ला की त़रफ़ से मदद आने और अपने फ़त्ह़ याब होने की उम्मीद थी। **32 :** और उन का सब्र व इख़्लास मिह़क (कसोटिये) इम्तिह़ान पर लाया गया।

www.dawateislami.net

اِذْ يَقُوْلُ الْمُنٰفِقُوْنَ وَ الَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ مَّا وَعَدَنَا اللّٰهُ وَ

जब कहने लगे मुनाफ़िक़ और जिन के दिलों में रोग था[33] हमें अल्लाह व रसूल

رَسُوْلُهٗۤ اِلَّا غُرُوْرًا ﴿۱۲﴾ وَ اِذْ قَالَتْ طَّآىِٕفَةٌ مِّنْهُمْ يٰۤاَهْلَ يَثْرِبَ لَا

ने वा'दा न दिया था मगर फ़रेब का[34] और जब उन में से एक गुरौह ने कहा[35] ऐ मदीने वालो ![36] यहां तुम्हारे

مُقَامَ لَكُمْ فَارْجِعُوْا ۚ وَ يَسْتَاْذِنُ فَرِيْقٌ مِّنْهُمُ النَّبِيَّ يَقُوْلُوْنَ اِنَّ

ठहरने की जगह नहीं[37] तुम घरों को वापस चलो और उन में से एक गुरौह[38] नबी से इज़्न मांगता था येह कह कर कि

بُيُوْتَنَا عَوْرَةٌ ؕۛ وَ مَا هِيَ بِعَوْرَةٍ ۚۛ اِنْ يُّرِيْدُوْنَ اِلَّا فِرَارًا ﴿۱۳﴾ وَ لَوْ معٓ

हमारे घर बे हिफ़ाज़त हैं और वोह बे हिफ़ाज़त न थे वोह तो न चाहते थे मगर भागना और अगर

دُخِلَتْ عَلَيْهِمْ مِّنْ اَقْطَارِهَا ثُمَّ سُىِٕلُوا الْفِتْنَةَ لَاٰتَوْهَا وَ مَا تَلَبَّثُوْا

उन पर फ़ौजें मदीने के अत्राफ़ से आतीं फिर उन से कुफ़्र चाहतीं तो ज़रूर उन का मांगा दे बैठते[39] और इस में देर न

بِهَاۤ اِلَّا يَسِيْرًا ﴿۱۴﴾ وَ لَقَدْ كَانُوْا عَاهَدُوا اللّٰهَ مِنْ قَبْلُ لَا يُوَلُّوْنَ

करते मगर थोड़ी और बेशक इस से पहले वोह अल्लाह से अ़हद कर चुके थे कि पीठ न

الْاَدْبَارَ ؕ وَ كَانَ عَهْدُ اللّٰهِ مَسْـُٔوْلًا ﴿۱۵﴾ قُلْ لَّنْ يَّنْفَعَكُمُ الْفِرَارُ اِنْ

फेरेंगे और अल्लाह का अ़हद पूछा जाएगा[40] तुम फ़रमाओ हरगिज़ तुम्हें भागना नफ़्अ़ न देगा अगर

فَرَرْتُمْ مِّنَ الْمَوْتِ اَوِ الْقَتْلِ وَ اِذًا لَّا تُمَتَّعُوْنَ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿۱۶﴾ قُلْ مَنْ

मौत या क़त्ल से भागो[41] और जब भी दुन्या न बरत्ने दिये जाओगे मगर थोड़ी[42] तुम फ़रमाओ वोह

ذَا الَّذِيْ يَعْصِمُكُمْ مِّنَ اللّٰهِ اِنْ اَرَادَ بِكُمْ سُوْٓءًا اَوْ اَرَادَ بِكُمْ رَحْمَةً ؕ

कौन है जो अल्लाह का हुक्म तुम पर से टाल दे अगर वोह तुम्हारा बुरा चाहे[43] या तुम पर मेहर (रहम) फ़रमाना चाहे[44]

33 : या'नी ज़ो'फ़े ए'तिक़ाद **34 :** येह बात मुअ़त्तिब बिन क़ुशैर ने कुफ़्फ़ार के लश्कर देख कर कही थी कि मुहम्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم तो हमें फ़ारस व रूम की फ़त्ह़ का वा'दा देते हैं और ह़ाल येह है कि हम में से किसी की येह मजाल भी नहीं कि अपने डेरे से बाहर निकल सके तो येह वा'दा निरा धोका है। **35 :** या'नी मुनाफ़िक़ीन के एक गुरौह ने **36 :** येह मक़ूला मुनाफ़िक़ीन का है, उन्हों ने मदीनए त़य्यिबा को यसरिब कहा। **मस्अला :** मुसल्मानों को यसरिब न कहना चाहिये। ह़दीस शरीफ़ में मदीनए त़य्यिबा को यसरिब कहने की मुमानअ़त आई है। हु़ज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم को ना गवार था कि मदीनए पाक को यसरिब कहा जाए क्यूं कि यसरिब के मा'ना अच्छे नहीं हैं। **37 :** या'नी रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم के लश्कर में **38 :** या'नी बनी ह़ारिसा व बनी सलमा। **39 :** या'नी इस्लाम से मुन्ह़रिफ़ हो जाते **40 :** या'नी आख़िरत में अल्लाह तआ़ला इस को दरयाफ़्त फ़रमाएगा कि क्यूं वफ़ा नहीं किया गया। **41 :** क्यूं कि जो मुक़द्दर है वोह ज़रूर हो कर रहेगा। **42 :** या'नी अगर वक़्त नहीं आया है तो भी भाग कर थोड़े ही दिन जितनी उ़म्र बाक़ी है उतने ही दुन्या को बरतोगे और येह एक क़लील मुद्दत है। **43 :** या'नी उस को तुम्हारा क़त्ल व हलाक मन्ज़ूर हो तो उस को कोई दफ़्अ़ नहीं कर सकता। **44 :** अम्नो आ़फ़िय्यत

www.dawateislami.net

وَلَا يَجِدُوْنَ لَهُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلِيًّا وَّلَا نَصِيْرًا ﴿۱۷﴾ قَدْ يَعْلَمُ اللّٰهُ

और वोह अल्लाह के सिवा कोई हामी न पाएंगे न मददगार बेशक अल्लाह जानता है

الْمُعَوِّقِيْنَ مِنْكُمْ وَالْقَآئِلِيْنَ لِاِخْوَانِهِمْ هَلُمَّ اِلَيْنَا ۚ وَلَا يَاْتُوْنَ

तुम्हारे उन को जो औरों को जिहाद से रोकते हैं और अपने भाइयों से कहते हैं हमारी त़रफ़ चले आओ[45] और लड़ाई में

الْبَاْسَ اِلَّا قَلِيْلًا ۙ﴿۱۸﴾ اَشِحَّةً عَلَيْكُمْ ۚۖ فَاِذَا جَآءَ الْخَوْفُ رَاَيْتَهُمْ

नहीं आते मगर थोड़े[46] तुम्हारी मदद में गई (कोताही) करते हैं फिर जब डर का वक़्त आए तुम उन्हें

يَنْظُرُوْنَ اِلَيْكَ تَدُوْرُ اَعْيُنُهُمْ كَالَّذِیْ يُغْشٰى عَلَيْهِ مِنَ الْمَوْتِ ۚ فَاِذَا

देखोगे तुम्हारी त़रफ़ यूं नज़र करते हैं कि उन की आंखें घूम रही हैं जैसे किसी पर मौत छाई हो फिर जब

ذَهَبَ الْخَوْفُ سَلَقُوْكُمْ بِاَلْسِنَةٍ حِدَادٍ اَشِحَّةً عَلَى الْخَيْرِ ؕ اُولٰٓئِكَ

डर का वक़्त निकल जाए[47] तुम्हें त़ा'ने देने लगें तेज़ ज़बानों से माले ग़नीमत के लालच में[48] येह लोग

لَمْ يُؤْمِنُوْا فَاَحْبَطَ اللّٰهُ اَعْمَالَهُمْ ؕ وَكَانَ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرًا ﴿۱۹﴾

ईमान लाए ही नहीं[49] तो अल्लाह ने इन के अ़मल अकारत कर दिये[50] और येह अल्लाह को आसान है

يَحْسَبُوْنَ الْاَحْزَابَ لَمْ يَذْهَبُوْا ۚ وَاِنْ يَّاْتِ الْاَحْزَابُ يَوَدُّوْا

वोह समझ रहे हैं कि काफ़िरों के लश्कर अभी न गए[51] और अगर लश्कर दोबारा आएं तो उन की[52] ख़्वाहिश होगी

لَوْ اَنَّهُمْ بَادُوْنَ فِی الْاَعْرَابِ يَسْاَلُوْنَ عَنْ اَنْۢبَآئِكُمْ ؕ وَلَوْ كَانُوْا فِيْكُمْ

कि किसी त़रह गाउं में निकल कर[53] तुम्हारी ख़बरें पूछते[54] और अगर वोह तुम में रहते

अ़त़ा फ़रमा कर। **45 :** और सय्यिदे आ़लम मुहम्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को छोड़ दो, इन के साथ जिहाद में न रहो, इस में जान का ख़त़रा है। **शाने नुज़ूल :** येह आयत मुनाफ़िक़ीन के ह़क़ में नाज़िल हुई, उन के पास यहूद ने पयाम भेजा था कि तुम क्यूं अपनी जानें अबू सुफ़्यान के हाथों से हलाक कराना चाहते हो, उस के लश्करी इस मरतबा अगर तुम्हें पा गए तो तुम में से किसी को बाक़ी न छोड़ेंगे, हमें तुम्हारा अन्देशा है, तुम हमारे भाई और हमसाए हो, हमारे पास आ जाओ, येह ख़बर पा कर अ़ब्दुल्लाह बिन उबय बिन सलूल मुनाफ़िक़ और उस के साथी मोमिनीन को अबू सुफ़्यान और उस के साथियों से डरा कर रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم का साथ देने से रोकने लगे और इस में उन्हों ने बहुत कोशिश की लेकिन जिस क़दर उन्हों ने कोशिश की मोमिनीन का सबाते इस्तिक़्लाल और बढ़ता गया। **46 :** रियाकारी और दिखावट के लिये। **47 :** और अम्नो ग़नीमत ह़ासिल हो **48 :** और येह कहें हमें ज़ियादा ह़िस्सा दो हमारी ही वज्ह से तुम ग़ालिब हुए हो। **49 :** ह़क़ीक़त में। अगर्चे इन्हों ने ज़बानों से ईमान का इज़्हार किया **50 :** या'नी चूंकि ह़क़ीक़त में वोह मोमिन न थे इस लिये उन के तमाम ज़ाहिरी अ़मल जिहाद वग़ैरा सब बात़िल कर दिये। **51 :** या'नी मुनाफ़िक़ीन अपनी बुज़दिली व ना मर्दी से अभी तक येह समझ रहे हैं कि कुफ़्फ़ारे क़ुरैश व ग़त़फ़ान व यहूद वग़ैरा अभी तक मैदान छोड़ कर भागे नहीं हैं अगर्चे ह़क़ीक़ते ह़ाल येह है कि वोह भाग चुके। **52 :** या'नी मुनाफ़िक़ीन की अपनी ना मर्दी के बाइ़स येही आरज़ू और **53 :** मदीनए त़य्यिबा के आने जाने वालों से **54 :** कि मुसल्मानों का क्या अन्जाम हुवा कुफ़्फ़ार के मुक़ाबले में उन की क्या ह़ालत रही।

www.dawateislami.net

ع ٢ ١٢ ١٨

مَّا قٰتَلُوْۤا اِلَّا قَلِیْلًا ۠ (٢٠) لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِیْ رَسُوْلِ اللّٰهِ اُسْوَةٌ حَسَنَةٌ

जब भी न लड़ते मगर थोड़े[55] बेशक तुम्हें रसूलुल्लाह की पैरवी बेहतर है[56]

لِّمَنْ كَانَ یَرْجُوا اللّٰهَ وَ الْیَوْمَ الْاٰخِرَ وَ ذَكَرَ اللّٰهَ كَثِیْرًا ؕ (٢١) وَ لَمَّا رَاَ

उस के लिये कि **अल्लाह** और पिछले दिन की उम्मीद रखता हो और **अल्लाह** को बहुत याद करे[57] और जब मुसल्मानों

الْمُؤْمِنُوْنَ الْاَحْزَابَ ۙ قَالُوْا هٰذَا مَا وَعَدَنَا اللّٰهُ وَ رَسُوْلُهٗ وَ صَدَقَ

ने काफ़िरों के लश्कर देखे बोले येह है वोह जो हमें वा'दा दिया था **अल्लाह** और उस के रसूल ने[58] और सच फ़रमाया

اللّٰهُ وَ رَسُوْلُهٗ ؗ وَ مَا زَادَهُمْ اِلَّاۤ اِیْمَانًا وَّ تَسْلِیْمًا ؕ (٢٢) مِنَ الْمُؤْمِنِیْنَ

अल्लाह और उस के रसूल ने[59] और इस से उन्हें न बढ़ा मगर ईमान और **अल्लाह** की रिज़ा पर राज़ी होना मुसल्मानों में कुछ

رِجَالٌ صَدَقُوْا مَا عَاهَدُوا اللّٰهَ عَلَیْهِ ۚ فَمِنْهُمْ مَّنْ قَضٰى نَحْبَهٗ وَ مِنْهُمْ

वोह मर्द हैं जिन्हों ने सच्चा कर दिया जो अ़हद **अल्लाह** से किया था[60] तो उन में कोई अपनी मन्नत पूरी कर चुका[61] और कोई

مَّنْ یَّنْتَظِرُ ۖ ۚ وَ مَا بَدَّلُوْا تَبْدِیْلًا ۙ (٢٣) لِّیَجْزِیَ اللّٰهُ الصّٰدِقِیْنَ بِصِدْقِهِمْ

राह देख रहा है[62] और वोह ज़रा न बदले[63] ताकि **अल्लाह** सच्चों को उन के सच का सिला दे

وَ یُعَذِّبَ الْمُنٰفِقِیْنَ اِنْ شَآءَ اَوْ یَتُوْبَ عَلَیْهِمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ غَفُوْرًا

और मुनाफ़िक़ों को अ़ज़ाब करे अगर चाहे या उन्हें तौबा दे बेशक **अल्लाह** बख़्शने वाला

55 : रियाकारी और उ़ज़्र रखने के लिये ताकि येह कहने का मौक़अ़ मिल जाए कि हम भी तो तुम्हारे साथ जंग में शरीक थे। **56 :** इन की अच्छी तरह इत्तिबाअ़ करो और दीने इलाही की मदद करो और रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم का साथ न छोड़ो और मसाइब पर सब्र करो और रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की सुन्नतों पर चलो येह बेहतर है। **57 :** हर मौक़अ़ पर उस का ज़िक्र करे, ख़ुशी में भी रन्ज में भी, तंगी में भी फ़राख़ी में भी। **58 :** कि तुम्हें शिद्दत व बला पहुंचेगी और तुम आज़्माइश में डाले जाओगे और पहलों की त़रह़ तुम पर सख़्तियां आएंगी और लश्कर जम्अ़ हो हो कर तुम पर टूटेंगे और अन्जामे कार तुम ग़ालिब होगे और तुम्हारी मदद फ़रमाई जाएगी जैसा कि **अल्लाह** तआला ने फ़रमाया है ''اَمْ حَسِبْتُمْ اَنْ تَدْخُلُوا الْجَنَّةَ وَلَمَّا يَاْتِكُمْ مَّثَلُ الَّذِيْنَ خَلَوْا مِنْ قَبْلِكُمْ'' الاية और ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا से मरवी है कि सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने अपने अस्ह़ाब से फ़रमाया कि पिछली नव या दस रातों में लश्कर तुम्हारी त़रफ़ आने वाले हैं। जब उन्हों ने देखा कि इस मीआ़द पर लश्कर आ गए तो कहा : येह है वोह जो हमें **अल्लाह** और उस के रसूल ने वा'दा दिया था। **59 :** या'नी जो उस के वा'दे हैं सब सच्चे हैं, सब यक़ीनन वाक़ेअ़ होंगे, हमारी मदद भी होगी, हमें ग़लबा भी दिया जाएगा और मक्कए मुकर्रमा और रूम व फ़ारस भी फ़त्ह़ होंगे। **60 :** ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी और ह़ज़रते त़ल्ह़ा और ह़ज़रते सईद बिन ज़ैद और ह़ज़रते ह़म्ज़ा और ह़ज़रते मुस्अ़ब वग़ैरहुम رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُم ने नज़्र की थी कि वोह जब रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के साथ जिहाद का मौक़अ़ पाएंगे तो साबित रहेंगे यहां तक कि शहीद हो जाएं। उन की निस्बत इस आयत में इर्शाद हुवा कि उन्हों ने अपना वा'दा सच्चा कर दिया। **61 :** जिहाद पर साबित रहा यहां तक कि शहीद हो गया जैसे कि ह़ज़रते ह़म्ज़ा व मुस्अ़ब رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا। **62 :** और शहादत का इन्तिज़ार कर रहा है जैसे कि ह़ज़रते उ़स्मान और ह़ज़रते त़ल्ह़ा رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا। **63 :** अपने अ़ह्द पर वैसे ही साबित क़दम रहे शहीद हो जाने वाले भी और शहादत का इन्तिज़ार करने वाले भी, उन मुनाफ़िक़ीन और मरीज़ुल क़ल्ब लोगों पर ता'रीज़ है जो अपने अ़ह्द पर क़ाइम न रहे।

www.dawateislami.net

رَّحِیۡمًا ﴿ۚ۲۴﴾ وَرَدَّ اللّٰہُ الَّذِیۡنَ کَفَرُوۡا بِغَیۡظِہِمۡ لَمۡ یَنَالُوۡا خَیۡرًا ؕ وَکَفَی

मेह्रबान है और **अल्लाह** ने काफ़िरों को[64] उन के दिलों की जलन के साथ पलटाया कि कुछ भला न पाया[65] और **अल्लाह** ने

اللّٰہُ الۡمُؤۡمِنِیۡنَ الۡقِتَالَ ؕ وَکَانَ اللّٰہُ قَوِیًّا عَزِیۡزًا ﴿ۚ۲۵﴾ وَاَنۡزَلَ الَّذِیۡنَ

मुसल्मानों को लड़ाई की किफ़ायत दी[66] और **अल्लाह** ज़बर दस्त इ़ज़्ज़त वाला है और जिन अहले किताब

ظَاہَرُوۡہُمۡ مِّنۡ اَہۡلِ الۡکِتٰبِ مِنۡ صَیَاصِیۡہِمۡ وَقَذَفَ فِیۡ قُلُوۡبِہِمُ

ने उन की मदद की थी[67] उन्हें उन के क़ल्ओं से उतारा[68] और उन के दिलों में

الرُّعۡبَ فَرِیۡقًا تَقۡتُلُوۡنَ وَتَاۡسِرُوۡنَ فَرِیۡقًا ﴿ۚ۲۶﴾ وَاَوۡرَثَکُمۡ اَرۡضَہُمۡ وَ

रो'ब डाला उन में एक गुरोह को तुम क़त्ल करते हो[69] और एक गुरोह को क़ैद[70] और हम ने तुम्हारे हाथ लगाए उन की ज़मीन और

دِیَارَہُمۡ وَاَمۡوَالَہُمۡ وَاَرۡضًا لَّمۡ تَطَـُٔوۡہَا ؕ وَکَانَ اللّٰہُ عَلٰی کُلِّ شَیۡءٍ

उन के मकान और उन के माल[71] और वोह ज़मीन जिस पर तुम ने अभी क़दम नहीं रखा है[72] और **अल्लाह** हर चीज़ पर

قَدِیۡرًا ﴿٪۲۷﴾ یٰۤاَیُّہَا النَّبِیُّ قُلۡ لِّاَزۡوَاجِکَ اِنۡ کُنۡتُنَّ تُرِدۡنَ الۡحَیٰوۃَ ع ۳ ۱۹

क़ादिर है ऐ ग़ैब बताने वाले (नबी) अपनी बीबियों से फ़रमा दे अगर तुम दुन्या की ज़िन्दगी और

64 : या'नी कुरैश व ग़तफ़ान वग़ैरा के लश्करों को जिन का ऊपर ज़िक्र हो चुका है। **65 :** नाकामो ना मुराद वापस हुए। **66 :** कि दुश्मन फ़िरिश्तों की तक्बीरों और हवा की सख़्तियों से भाग निकले। **67 :** या'नी बनी कुरैज़ा ने रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم के मुक़ाबिल कुरैश व ग़तफ़ान वग़ैरा अह्ज़ाब की मदद की थी **68 :** इस में ग़ज़्वए बनी कुरैज़ा का बयान है, येह आख़िरे ज़ी क़ादा 4 सि.हि. या 5 सि.हि. में हुवा जब ग़ज़्वए ख़न्दक़ में शब को मुख़ालिफ़ीन के लश्कर भाग गए जिस का ऊपर की आयात में ज़िक्र हो चुका है, उस शब की सुब्ह को रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم और सहाबए किराम मदीनए तय्यिबा में तशरीफ़ लाए और हथियार उतार दिये, उस रोज़ ज़ोह्र के वक़्त जब सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم का सरे मुबारक धोया जा रहा था जिब्रीले अमीन हाज़िर हुए और उन्हों ने अ़र्ज़ किया कि हुज़ूर ने हथियार रख दिये फ़िरिश्तों ने चालीस रोज़ से हथियार नहीं रखे हैं, **अल्लाह** तआ़ला आप को बनी कुरैज़ा की त़रफ़ जाने का हुक्म फ़रमाता है। हुज़ूर ने हुक्म फ़रमाया कि निदा कर दी जाए कि जो फ़रमां बरदार हो वोह अ़स्र की नमाज़ न पढ़े मगर बनी कुरैज़ा में जा कर। हुज़ूर येह फ़रमा कर रवाना हो गए और मुसल्मान चलने शुरूअ़ हुए और यके बा'द दीगरे हुज़ूर की ख़िदमत में पहुंचते रहे यहां तक कि बा'ज़ हज़रात नमाज़े इशा के बा'द पहुंचे लेकिन उन्हों ने उस वक़्त तक अ़स्र की नमाज़ नहीं पढ़ी थी क्यूं कि हुज़ूर ने बनी कुरैज़ा में पहुंच कर अ़स्र की नमाज़ पढ़ने का हुक्म दिया था इस लिये उस रोज़ उन्हों ने अ़स्र बा'दे इशा पढ़ी और इस पर न **अल्लाह** तआ़ला ने उन की गिरिफ़्त फ़रमाई न रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने। लश्करे इस्लाम ने पच्चीस रोज़ तक बनी कुरैज़ा का मुहासरा रखा, इस से वोह तंग आ गए और **अल्लाह** तआ़ला ने उन के दिलों में रो'ब डाला। रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने उन से फ़रमाया कि तुम मेरे हुक्म पर क़ल्ओं से उतरोगे ? उन्हों ने इन्कार किया तो फ़रमाया क्या क़बीलए औस के सरदार सा'द बिन मुआ़ज़ के हुक्म पर उतरोगे ? इस पर वोह राज़ी हुए और सा'द बिन मुआ़ज़ को उन के बारे में हुक्म देने पर मामूर फ़रमाया। हज़रते सा'द ने हुक्म दिया कि मर्द क़त्ल कर दिये जाएं, औ़रतें और बच्चे क़ैद किये जाएं, फिर बाज़ारे मदीना में ख़न्दक़ खोदी गई और वहां ला कर उन सब की गरदनें मारी गईं। उन लोगों में क़बीलए बनी नज़ीर का सरदार हुय्य बिन अख़्त़ब और बनी कुरैज़ा का सरदार का'ब बिन असद भी था और येह लोग छ[6] सो या सात सो जवान थे जो गरदनें काट कर ख़न्दक़ में डाल दिये गए। (مدارک وجمل) **69 :** या'नी मुक़ातिलीन को। **70 :** औ़रतों और बच्चों को। **71 :** नक़्द और सामान और मवेशी सब मुसल्मानों के क़ब्ज़े में आए। **72 :** इस ज़मीन से मुराद ख़ैबर है जो फ़त्हे कुरैज़ा के बा'द मुसल्मानों के क़ब्ज़े में आया या वोह हर ज़मीन मुराद है जो क़ियामत तक फ़त्ह हो कर मुसल्मानों के क़ब्ज़े में आने वाली है।

www.dawateislami.net

الدُّنْيَا وَزِيْنَتَهَا فَتَعَالَيْنَ اُمَتِّعْكُنَّ وَاُسَرِّحْكُنَّ سَرَاحًا جَمِيْلًا ﴿۲۸﴾ وَاِنْ

इस की आराइश चाहती हो[73] तो आओ मैं तुम्हें माल दूं[74] और अच्छी तरह छोड़ दूं[75] और अगर

كُنْتُنَّ تُرِدْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَالدَّارَ الْاٰخِرَةَ فَاِنَّ اللّٰهَ اَعَدَّ لِلْمُحْسِنٰتِ

तुम **अल्लाह** और उस के रसूल और आख़िरत का घर चाहती हो तो बेशक **अल्लाह** ने तुम्हारी नेकी वालियों

مِنْكُنَّ اَجْرًا عَظِيْمًا ﴿۲۹﴾ يٰنِسَآءَ النَّبِيِّ مَنْ يَّاْتِ مِنْكُنَّ بِفَاحِشَةٍ

के लिये बड़ा अज्र तय्यार कर रखा है ऐ नबी की बीबियो जो तुम में सरीह़ हया के ख़िलाफ़ कोई

مُّبَيِّنَةٍ يُّضٰعَفْ لَهَا الْعَذَابُ ضِعْفَيْنِ ؕ وَكَانَ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرًا ﴿۳۰﴾

जुरअत करे[76] उस पर औरों से दूना (दुगना) अ़ज़ाब होगा[77] और येह **अल्लाह** को आसान है

73 : या'नी अगर तुम्हें माले कसीर और अस्बाबे ऐ़श दरकार है। **शाने नुज़ूल :** सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की अज़्वाजे मुत़ह्हरात ने आप से दुन्यावी सामान त़लब किये और नफ़क़ा में ज़ियादती की दरख़्वास्त की। यहां तो कमाले ज़ोह्द था सामाने दुन्या और इस का जम्अ़ करना गवारा ही न था, इस लिये येह ख़ात़िरे अक़्दस पर गिरां हुवा और येह आयत नाज़िल हुई और अज़्वाजे मुत़ह्हरात को तख़्यीर दी गई उस वक़्त हुज़ूर की नव बीबियां थीं। **पांच क़ुरैशिया :** (1) ह़ज़रते आ़इशा बिन्ते अबी बक्र सिद्दीक़ رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ, (2) ह़फ़्सा बिन्ते फ़ारूक़, (3) उम्मे ह़बीबा बिन्ते अबी सुफ़्यान, (4) उम्मे सलमा बिन्ते अबी उमय्या, (5) सौदह बिन्ते ज़म्आ़ और **चार ग़ैर क़ुरैशिया :** (1) ज़ैनब बिन्ते जह़्श असदिया, (2) मैमूना बिन्ते ह़ारिस हिलालिया, (3) सफ़िय्या बिन्ते हुयय बिन अख़्त़ब ख़ैबरिया, (4) जुवैरिया बिन्ते ह़ारिस मुस्त़लिक़िया رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُنَّ। सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने सब से पहले ह़ज़रते आ़इशा رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا को येह आयत सुना कर इख़्तियार दिया और फ़रमाया कि जल्दी न करो अपने वालिदैन से मश्वरा कर के जो राय हो उस पर अ़मल करो। उन्हों ने अ़र्ज़ किया : हुज़ूर के मुआ़मले में मश्वरा कैसा मैं **अल्लाह** को और उस के रसूल को और दारे आख़िरत को चाहती हूं और बाक़ी अज़्वाज ने भी येही जवाब दिया। **मस्अला :** जिस औ़रत को इख़्तियार दिया जाए वोह अगर अपने ज़ौज को इख़्तियार करे तो त़लाक़ वाक़ेअ़ नहीं होती और अगर अपने नफ़्स को इख़्तियार करे तो हमारे नज़्दीक त़लाक़े बाइन वाक़ेअ़ होती है। 74 : जिस औ़रत के साथ बा'दे निकाह़ दुख़ूल या ख़ल्वते सह़ीह़ा हुई हो उस को त़लाक़ दी जाए तो कुछ सामान देना मुस्तह़ब है और वोह सामान तीन कपड़ों का जोड़ा होता है। यहां माल से वोही मुराद है। **मस्अला :** जिस औ़रत का महर मुक़र्रर न किया गया हो उस को क़ब्ले दुख़ूल त़लाक़ दी तो येह जोड़ा देना वाजिब है। 75 : बिग़ैर किसी ज़रर के। 76 : जैसे कि शोहर की इत़ाअ़त में कोताही करना और उस के साथ कज ख़ुल्क़ी से पेश आना क्यूं कि बदकारी से तो **अल्लाह** तआ़ला अम्बिया की बीबियों को पाक रखता है। 77 : क्यूं कि जिस शख़्स की फ़ज़ीलत ज़ियादा होती है उस से अगर क़ुसूर वाक़ेअ़ हो तो वोह क़ुसूर भी दूसरों के क़ुसूर से ज़ियादा सख़्त क़रार दिया जाता है। **मस्अला :** इसी लिये आ़लिम का गुनाह जाहिल के गुनाह से ज़ियादा क़बीह़ होता है और इसी लिये आज़ादों की सज़ा शरीअ़त में ग़ुलामों से ज़ियादा मुक़र्रर है और नबी عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की बीबियां तमाम जहान की औ़रतों से ज़ियादा फ़ज़ीलत रखती हैं इस लिये इन की अदना बात सख़्त गिरिफ़्त के क़ाबिल है। **फ़ाएदा :** लफ़्ज़ फ़ाह़िशा जब मा'रिफ़ा हो कर वारिद हो तो उस से ज़िना और लिवात़त मुराद होती है और अगर नकिरए ग़ैर मौसूफ़ा हो कर लाया जाए तो इस से तमाम गुनाह मुराद होते हैं और जब मौसूफ़ हो कर वारिद हो तो इस से शोहर की ना फ़रमानी और फ़सादे मा'शरत मुराद होता है, इस आयत में नकिरए मौसूफ़ा है इसी लिये इस से शोहर की इत़ाअ़त में कोताही और कज ख़ुल्क़ी मुराद है जैसा कि ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا से मन्क़ूल है। (جمل وغیرہ)

www.dawateislami.net

وَمَنْ يَّقْنُتْ مِنْكُنَّ لِلّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَتَعْمَلْ صَالِحًا نُّؤْتِهَاۤ اَجْرَهَا

और[78] जो तुम में फ़रमां बरदार रहे अल्लाह और रसूल की और अच्छा काम करे हम उसे औरों से दूना (दुगना)

مَرَّتَيْنِۙ وَاَعْتَدْنَا لَهَا رِزْقًا كَرِيْمًا ﴿٣١﴾ يٰنِسَآءَ النَّبِيِّ لَسْتُنَّ كَاَحَدٍ

सवाब देंगे[79] और हम ने उस के लिये इ़ज़्ज़त की रोज़ी तय्यार कर रखी है[80] ऐ नबी की बीबियो तुम और औ़रतों

مِّنَ النِّسَآءِ اِنِ اتَّقَيْتُنَّ فَلَا تَخْضَعْنَ بِالْقَوْلِ فَيَطْمَعَ الَّذِيْ فِيْ

की त़रह़ नहीं हो[81] अगर अल्लाह से डरो तो बात में ऐसी नरमी न करो कि दिल का रोगी कुछ

قَلْبِهٖ مَرَضٌ وَّقُلْنَ قَوْلًا مَّعْرُوْفًا ﴿٣٢﴾ وَقَرْنَ فِيْ بُيُوْتِكُنَّ وَلَا تَبَرَّجْنَ

लालच करे[82] हां अच्छी बात कहो[83] और अपने घरों में ठहरी रहो और बे पर्दा न रहो

تَبَرُّجَ الْجَاهِلِيَّةِ الْاُوْلٰى وَاَقِمْنَ الصَّلٰوةَ وَاٰتِيْنَ الزَّكٰوةَ وَاَطِعْنَ

जैसे अगली जाहिलिय्यत की बे पर्दगी[84] और नमाज़ क़ाइम रखो और ज़कात दो और अल्लाह और

اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ؕ اِنَّمَا يُرِيْدُ اللّٰهُ لِيُذْهِبَ عَنْكُمُ الرِّجْسَ اَهْلَ

उस के रसूल का हुक्म मानो अल्लाह तो येही चाहता है ऐ नबी के घर वालो कि तुम से हर नापाकी दूर

الْبَيْتِ وَيُطَهِّرَكُمْ تَطْهِيْرًا ﴿٣٣﴾ وَاذْكُرْنَ مَا يُتْلٰى فِيْ بُيُوْتِكُنَّ مِنْ

फ़रमा दे और तुम्हें पाक कर के ख़ूब सुथरा कर दे[85] और याद करो जो तुम्हारे घरों में पढ़ी जाती हैं

78 : ऐ नबी عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की बीबियो ! **79 :** या'नी अगर औरों को एक नेकी पर दस गुना सवाब देंगे तो तुम्हें बीस गुना क्यूं कि तमाम जहान की औ़रतों में तुम्हें शरफ़ व फ़ज़ीलत है और तुम्हारे अ़मल में भी दो जिहतें हैं एक अदाए इत़ाअ़त दूसरे रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की रिज़ाजोई और क़नाअ़त व हुस्ने मुआ़शरत के साथ हुज़ूर को ख़ुशनूद करना। **80 :** जन्नत में। **81 :** तुम्हारा मर्तबा सब से ज़ियादा है और तुम्हारा अज्र सब से बढ़ कर, जहान की औ़रतों में कोई तुम्हारी हमसर नहीं। **82 :** इस में ता'लीमे आदाब है कि अगर ब ज़रूरत ग़ैर मर्द से पसे पर्दा गुफ़्तगू करनी पड़े तो क़स्द करो कि लहजे में नज़ाकत न आने पाए और बात में लोच न हो, बात निहायत सादगी से की जाए, इ़फ़्फ़त मआब (पाक दामन) ख़्वातीन के लिये येही शायां है। **83 :** दीन व इस्लाम की और नेकी की ता'लीम और पन्दो नसीह़त की अगर ज़रूरत पेश आए मगर बे लोच लहजे से। **84 :** अगली जाहिलिय्यत से मुराद क़ब्ले इस्लाम का ज़माना है, उस ज़माने में औ़रतें इतराती निकलती थीं, अपनी ज़ीनत व मह़ासिन का इज़्हार करती थीं कि ग़ैर मर्द देखें, लिबास ऐसे पहनती थीं जिन से जिस्म के आ'ज़ा अच्छी त़रह़ न ढकें और पिछली जाहिलिय्यत से अख़ीर ज़माना मुराद है जिस में लोगों के अफ़्आ़ल पहलों की मिस्ल हो जाएंगे। **85 :** या'नी गुनाहों की नजासत से तुम आलूदा न हो। इस आयत से अहले बैत की फ़ज़ीलत साबित होती है और अहले बैत में नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के अज़्वाजे मुत़ह्हरात और ह़ज़रते ख़ातूने जन्नत फ़ात़िमा ज़हरा और अ़लिय्ये मुर्तज़ा और ह़सनैने करीमैन رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم सब दाख़िल हैं। आयात व अह़ादीस को जम्अ़ करने से येही नतीजा निकलता है और येही ह़ज़रते इमाम अबू मन्सूर मातुरीदी رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से मन्क़ूल है। इन आयात में अहले बैते रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को नसीह़त फ़रमाई गई है ताकि वोह गुनाहों से बचें और तक़्वा व परहेज़ गारी के पाबन्द रहें। गुनाहों को नापाकी से और परहेज़ गारी को पाकी से इस्तिआ़रा फ़रमाया गया क्यूं कि गुनाहों का मुरतकिब उन से ऐसा ही मुलव्वस होता है जैसा जिस्म नजासतों से, इस त़र्ज़े कलाम से मक़्सूद येह है कि अरबाबे उ़क़ूल को गुनाहों से नफ़रत दिलाई जाए और तक़्वा व परहेज़ गारी की तरग़ीब दी जाए।

www.dawateislami.net

ع ٤

اٰيٰتِ اللّٰهِ وَالْحِكْمَةِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ لَطِيْفًا خَبِيْرًا ﴿۳۴﴾ اِنَّ الْمُسْلِمِيْنَ وَ

अल्लाह की आयतें और हिक्मत[86] बेशक **अल्लाह** हर बारीकी जानता ख़बरदार है बेशक मुसल्मान मर्द और

الْمُسْلِمٰتِ وَالْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ وَالْقٰنِتِيْنَ وَالْقٰنِتٰتِ وَالصّٰدِقِيْنَ

मुसल्मान औ़रतें[87] और ईमान वाले और ईमान वालियां और फ़रमां बरदार और फ़रमां बरदारें और सच्चे

وَالصّٰدِقٰتِ وَالصّٰبِرِيْنَ وَالصّٰبِرٰتِ وَالْخٰشِعِيْنَ وَالْخٰشِعٰتِ وَ

और सच्चियां[88] और सब्र वाले और सब्र वालियां और आ़जिज़ी करने वाले और आ़जिज़ी करने वालियां और

الْمُتَصَدِّقِيْنَ وَالْمُتَصَدِّقٰتِ وَالصَّآئِمِيْنَ وَالصّٰٓئِمٰتِ وَالْحٰفِظِيْنَ

ख़ैरात करने वाले और ख़ैरात करने वालियां और रोज़े वाले और रोज़े वालियां और अपनी पारसाई निगाह

فُرُوْجَهُمْ وَالْحٰفِظٰتِ وَالذّٰكِرِيْنَ اللّٰهَ كَثِيْرًا وَّالذّٰكِرٰتِ ۙ اَعَدَّ اللّٰهُ

रखने वाले और निगाह रखने वालियां और **अल्लाह** को बहुत याद करने वाले और याद करने वालियां इन सब के लिये **अल्लाह**

لَهُمْ مَّغْفِرَةً وَّاَجْرًا عَظِيْمًا ﴿۳۵﴾ وَمَا كَانَ لِمُؤْمِنٍ وَّلَا مُؤْمِنَةٍ اِذَا قَضَى

ने बख़्शिश और बड़ा सवाब तय्यार कर रखा है और किसी मुसल्मान मर्द न मुसल्मान औ़रत को पहुंचता है कि जब **अल्लाह** व

اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗۤ اَمْرًا اَنْ يَّكُوْنَ لَهُمُ الْخِيَرَةُ مِنْ اَمْرِهِمْ ؕ وَمَنْ

रसूल कुछ हुक्म फ़रमा दें तो उन्हें अपने मुआ़मले का कुछ इख़्तियार रहे[89] और जो

86 : या'नी सुन्नत। **87 शाने नुज़ूल :** अस्मा बिन्ते उ़मैस जब अपने शोहर जा'फ़र बिन अबी ता़लिब के साथ ह़ब्शा से वापस आईं तो अज़्वाजे नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم से मिल कर उन्हों ने दरयाफ़्त किया कि क्या औ़रतों के बाब में भी कोई आयत नाज़िल हुई है ? उन्हों ने फ़रमाया : नहीं, तो अस्मा ने हु़ज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم से अ़र्ज़ किया कि हु़ज़ूर औ़रतें बड़े टोटे में हैं। फ़रमाया : क्यूं ? अ़र्ज़ किया कि इन का ज़िक्र ख़ैर के साथ होता ही नहीं जैसा कि मर्दों का होता है। इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई और इन के दस मरातिब मर्दों के साथ ज़िक्र किये गए और उन के साथ इन की मद्ह़ फ़रमाई गई। और मरातिब में से **पहला** मर्तबा "इस्लाम" है जो ख़ुदा और रसूल की फ़रमां बरदारी है। **दूसरा** "ईमान" कि वोह ए'तिक़ादे सह़ीह़ और ज़ाहिरो बातिन का मुवाफ़िक़ होना है। **तीसरा** मर्तबा "क़ुनूत" या'नी ता़अ़त है। **88 :** इस में **चौथे** मर्तबे का बयान है कि वोह "सिद्क़े निय्यात व सिद्क़े अक़्वाल व अफ़्आ़ल" है। इस के बा'द **पांचवें** मर्तबे सब्र का बयान है कि ता़अ़तों की पाबन्दी करना और मम्नूआ़त से एह़तिराज़ रखना ख़्वाह नफ़्स पर कितना ही शाक़ और गिरां हो, रिज़ाए इलाही के लिये इख़्तियार किया जाए। इस के बा'द फिर **छटे** मर्तबे "ख़ुशूअ़" का बयान है जो ता़अ़तों और इ़बादतों में क़ुलूब व जवारेह़ के साथ मुतवाज़ेअ़ होना है। इस के बा'द **सातवें** मर्तबे "सदक़ा" का बयान है जो **अल्लाह** तआ़ला के अ़ता किये हुए माल में से उस की राह में ब त़रीक़े फ़र्ज़ व नफ़्ल देना है। फिर **आठवें** मर्तबे "सौम" का बयान है येह भी फ़र्ज़ व नफ़्ल दोनों को शामिल है। मन्क़ूल है कि जिस ने हर हफ़्ते एक दिरहम सदक़ा किया वोह मुतसद्दिक़ीन में और जिस ने हर महीने अय्यामे बीज़ (चांद की 13, 14, 15) के तीन रोज़े रखे वोह साइमीन में शुमार किया जाता है। इस के बा'द **नवें** मर्तबे "इफ़्फ़त" का बयान है और वोह येह है कि अपनी पारसाई को मह़फ़ूज़ रखे और जो ह़लाल नहीं है उस से बचे। सब से आख़िर में **दसवें** मर्तबे "कस्रते ज़िक्र" का बयान है, ज़िक्र में तस्बीह़, तह़मीद, तह्लील, तक्बीर, क़िराअते क़ुरआन, इ़ल्मे दीन का पढ़ना पढ़ाना, नमाज़, वा'ज़, नसीह़त, मीलाद शरीफ़, ना'त शरीफ़ पढ़ना सब दाख़िल हैं। कहा गया है कि बन्दा ज़ाकिरीन में तब शुमार होता है जब कि वोह खड़े, बैठे, लैटे, हर ह़ाल में **अल्लाह** का ज़िक्र करे। **89 शाने नुज़ूल :** येह आयत ज़ैनब बिन्ते जह़्श असदिया और उन के भाई अ़ब्दुल्लाह बिन जह़्श और उन की वालिदा उमैमा बिन्ते अ़ब्दुल मुत्तलिब के ह़क़ में नाज़िल हुई, उमैमा हु़ज़ूर सय्यिदे आ़लम

www.dawateislami.net

يَّعْصِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ فَقَدْ ضَلَّ ضَلٰلًا مُّبِيْنًا ﴿۳۶﴾ وَاِذْ تَقُوْلُ لِلَّذِيْۤ

हुक्म न माने **अल्लाह** और उस के रसूल का वोह बेशक सरीह़ गुमराही बहका और ऐ मह़बूब याद करो जब तुम फ़रमाते थे उस से

اَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاَنْعَمْتَ عَلَيْهِ اَمْسِكْ عَلَيْكَ زَوْجَكَ وَاتَّقِ اللّٰهَ

जिसे **अल्लाह** ने ने'मत दी[90] और तुम ने उसे ने'मत दी[91] कि अपनी बीबी अपने पास रहने दे[92] और **अल्लाह** से डर[93]

وَتُخْفِيْ فِيْ نَفْسِكَ مَا اللّٰهُ مُبْدِيْهِ وَتَخْشَى النَّاسَ ۚ وَاللّٰهُ اَحَقُّ اَنْ

और तुम अपने दिल में रखते थे वोह जिसे **अल्लाह** को ज़ाहिर करना मन्ज़ूर था[94] और तुम्हें लोगों के ता'ने का अन्देशा था[95] और **अल्लाह** ज़ियादा सज़ावार है कि

تَخْشٰىهُ ؕ فَلَمَّا قَضٰى زَيْدٌ مِّنْهَا وَطَرًا زَوَّجْنٰكَهَا لِكَيْ لَا يَكُوْنَ عَلَى

उस का ख़ौफ़ रखो[96] फिर जब ज़ैद की ग़रज़ उस से निकल गई[97] तो हम ने वोह तुम्हारे निकाह़ में दे दी[98] कि मुसल्मानों पर कुछ

الْمُؤْمِنِيْنَ حَرَجٌ فِيْۤ اَزْوَاجِ اَدْعِيَآىِٕهِمْ اِذَا قَضَوْا مِنْهُنَّ وَطَرًا ؕ وَ

ह़रज न रहे उन के ले पालकों (मुंह बोले बेटों) की बीबियों में जब उन से उन का काम ख़त्म हो जाए[99] और

صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की फूफी थीं। वाक़िआ येह था कि ज़ैद बिन ह़ारिसा जिन को रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने आज़ाद किया था और वोह हुज़ूर ही की ख़िदमत में रहते थे, हुज़ूर ने ज़ैनब के लिये उन का पयाम दिया, उस को ज़ैनब ने और उन के भाई ने मन्ज़ूर नहीं किया। इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई और ह़ज़रते ज़ैनब और उन के भाई इस हुक्म को सुन कर राज़ी हो गए और हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने ह़ज़रते ज़ैद का निकाह़ उन के साथ कर दिया और हुज़ूर ने उन का महर दस दीनार साठ दिरहम, एक जोड़ा कपड़ा, पचास मुद (एक पैमाना है) खाना, तीस साअ़ खजूरें दीं। **मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि आदमी को रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की त़ाअ़त हर अम्र में वाजिब है और नबी عَلَیْہِ السَّلَام के मुक़ाबले में कोई अपने नफ़्स का भी ख़ुद मुख़्तार नहीं। **मस्अला :** इस आयत से येह भी साबित हुवा कि अम्र वुजूब के लिये होता है। **फ़ाएदा :** बा'ज़ तफ़ासीर में ह़ज़रते ज़ैद को ग़ुलाम कहा गया है मगर येह ख़ाली अज़ तसामोह (ख़त़ा से ख़ाली) नहीं क्यूं कि वोह हुर (आज़ाद) थे, गिरिफ़्तारी से बिल ख़ुसूस क़ब्ले बि'सत शरअ़न कोई शख़्स मरक़ूक़ या'नी मम्लूक नहीं हो जाता और वोह ज़माना फ़ितरत का था और अहले फ़ितरत को ह़र्बी नहीं कहा जाता। (کذا فی الجمل) **90 :** इस्लाम की जो बड़ी जलील ने'मत है। **91 :** आज़ाद फ़रमा कर, मुराद इस से ह़ज़रते ज़ैद बिन ह़ारिसा हैं कि हुज़ूर ने इन्हें आज़ाद किया और इन की परवरिश फ़रमाई। **92 शाने नुज़ूल :** जब ह़ज़रते ज़ैद का निकाह़ ह़ज़रते ज़ैनब से हो चुका तो हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم के पास **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ से वह़्य आई कि ज़ैनब आप की अज़्वाजे त़ाहिरात में दाख़िल होंगी, **अल्लाह** तआ़ला को येही मन्ज़ूर है। इस की सूरत येह हुई कि ह़ज़रते ज़ैद और ज़ैनब के दरमियान मुवाफ़क़त न हुई और ह़ज़रते ज़ैद ने सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم से ह़ज़रते ज़ैनब की सख़्त गुफ़्तारी, तेज़ ज़बानी, अ़दमे इत़ाअ़त और अपने आप को बड़ा समझने की शिकायत की। ऐसा बार बार इत्तिफ़ाक़ हुवा, हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ह़ज़रते ज़ैद को समझा देते, इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई। **93 :** ज़ैनब पर किब्र व ईज़ाए शोहर के इल्ज़ाम लगाने में। **94 :** या'नी आप येह ज़ाहिर नहीं फ़रमाते थे कि ज़ैनब से तुम्हारा निबाह नहीं हो सकेगा और त़लाक़ ज़रूर वाक़ेअ़ होगी और **अल्लाह** तआ़ला उन्हें अज़्वाजे मुत़ह्हरात में दाख़िल करेगा और **अल्लाह** तआ़ला को इस का ज़ाहिर करना मन्ज़ूर था। **95 :** या'नी जब ह़ज़रते ज़ैद ने ज़ैनब को त़लाक़ दे दी तो आप को लोगों के ता'न का अन्देशा हुवा कि **अल्लाह** तआ़ला का हुक्म तो है ह़ज़रते ज़ैनब के साथ निकाह़ करने का और ऐसा करने से लोग ता'ना देंगे कि सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने ऐसी औ़रत के साथ निकाह़ कर लिया जो उन के मुंहबोले बेटे के निकाह़ में रही थी। मक़्सूद येह है कि अम्रे मुबाह़ में बे जा ता'न करने वालों का कुछ अन्देशा न करना चाहिये। **96 :** और सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم सब से ज़ियादा **अल्लाह** का ख़ौफ़ रखने वाले और सब से ज़ियादा तक़्वा वाले हैं, जैसा कि ह़दीस शरीफ़ में है। **97 :** और ह़ज़रते ज़ैद ने ह़ज़रते ज़ैनब को त़लाक़ दे दी और इद्दत गुज़र गई **98 :** ह़ज़रते ज़ैनब की इद्दत गुज़रने के बा'द उन के पास ह़ज़रते ज़ैद रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم का पयाम ले कर गए और उन्हों ने सर झुका कर कमाले शर्मो अदब से उन्हें येह पयाम पहुंचाया, उन्हों ने कहा कि इस मुआ़मले में, मैं अपनी राय को कुछ भी दख़्ल नहीं देती, जो मेरे रब को मन्ज़ूर हो उस पर राज़ी हूं, येह कह कर वोह बारगाहे इलाही में मुतवज्जेह हुईं और उन्हों ने नमाज़ शुरूअ़ कर दी और येह आयत नाज़िल हुई। ह़ज़रते ज़ैनब को इस निकाह़ से बहुत ख़ुशी और फ़ख़्र हुवा। सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने इस शादी का वलीमा बहुत वुस्अ़त के साथ किया। **99 :** या'नी ताकि येह मा'लूम हो जाए कि ले पालक की बीबी से निकाह़ जाइज़ है।

www.dawateislami.net

كَانَ اَمْرُ اللّٰهِ مَفْعُوْلًا ﴿۳۷﴾ مَا كَانَ عَلَى النَّبِيِّ مِنْ حَرَجٍ فِيْمَا فَرَضَ

अल्लाह का हुक्म हो कर रहना नबी पर कोई ह़रज नहीं इस बात में जो अल्लाह ने उस के लिये

اللّٰهُ لَهٗ ؕ سُنَّةَ اللّٰهِ فِي الَّذِيْنَ خَلَوْا مِنْ قَبْلُ ؕ وَكَانَ اَمْرُ اللّٰهِ قَدَرًا

मुक़र्रर फ़रमाई[100] अल्लाह का दस्तूर चला आ रहा है उन में जो पहले गुज़र चुके[101] और अल्लाह का काम मुक़र्रर

مَّقْدُوْرَا ﴿۳۸﴾ الَّذِيْنَ يُبَلِّغُوْنَ رِسٰلٰتِ اللّٰهِ وَيَخْشَوْنَهٗ وَلَا يَخْشَوْنَ

तक़्दीर है वोह जो अल्लाह के पयाम पहुंचाते और उस से डरते और अल्लाह के सिवा

اَحَدًا اِلَّا اللّٰهَ ؕ وَكَفٰى بِاللّٰهِ حَسِيْبًا ﴿۳۹﴾ مَا كَانَ مُحَمَّدٌ اَبَآ اَحَدٍ

किसी का ख़ौफ़ न करते और अल्लाह बस (काफ़ी) है हिसाब लेने वाला[102] मुह़म्मद तुम्हारे मर्दों में किसी के

مِّنْ رِّجَالِكُمْ وَلٰكِنْ رَّسُوْلَ اللّٰهِ وَخَاتَمَ النَّبِيّٖنَ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ بِكُلِّ

बाप नहीं[103] हां अल्लाह के रसूल हैं[104] और सब नबियों में पिछले[105] और अल्लाह सब

٥ ع ٢

شَيْءٍ عَلِيْمًا ﴿۴۰﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اذْكُرُوا اللّٰهَ ذِكْرًا كَثِيْرًا ﴿۴۱﴾ وَّ

कुछ जानता है ऐ ईमान वालो अल्लाह को बहुत याद करो और

سَبِّحُوْهُ بُكْرَةً وَّاَصِيْلًا ﴿۴۲﴾ هُوَ الَّذِيْ يُصَلِّيْ عَلَيْكُمْ وَمَلٰٓئِكَتُهٗ

सुब्ह़ व शाम उस की पाकी बोलो[106] वोही है कि दुरूद भेजता है तुम पर वोह और उस के फ़िरिश्ते[107]

100 : या'नी अल्लाह तआ़ला ने जो उन के लिये मुबाह़ किया और बाबे निकाह़ में जो वुस्अ़त उन्हें अ़ता फ़रमाई इस पर इक़्दाम करने में कुछ ह़रज नहीं। **101 :** या'नी अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام को बाबे निकाह़ में वुस्अ़तें दी गईं कि दूसरों से ज़ियादा औ़रतें इन के लिये ह़लाल फ़रमाईं जैसा कि ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام की सो बीबियां और ह़ज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام की तीन सो बीबियां थीं। येह इन के ख़ास अह़काम हैं, इन के सिवा दूसरों को रवा नहीं, न कोई इस पर मो'तरिज़ हो सकता है। अल्लाह तआ़ला अपने बन्दों में जिस के लिये जो हुक्म फ़रमाए उस पर किसी को ए'तिराज़ की क्या मजाल। इस में यहूद का रद है जिन्हों ने सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم पर चार से ज़ियादा निकाह़ करने पर ता'न किया था, इस में उन्हें बताया गया कि येह हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के लिये ख़ास है जैसा कि पहले अम्बिया के लिये ता'दादे अज़्वाज में ख़ास अह़काम थे। **102 :** तो उसी से डरना चाहिये। **103 :** तो ह़ज़रते ज़ैद के भी आप ह़क़ीक़त में बाप नहीं कि इन की मन्कूह़ा आप के लिये ह़लाल न होती। क़ासिम व त़य्यिब व त़ाहिर व इब्राहीम हुज़ूर के फ़रज़न्द थे मगर वोह इस उ़म्र को न पहुंचे कि उन्हें मर्द कहा जाए, उन्हों ने बचपन में वफ़ात पाई। **104 :** और सब रसूल नासेह़ शफ़ीक़ और वाजिबुत्तौक़ीर व लाज़िमुत्ताअ़त होने के लिह़ाज़ से अपनी उम्मत के बाप कहलाते हैं, बल्कि इन के हुक़ूक़ ह़क़ीक़ी बाप के हुक़ूक़ से बहुत ज़ियादा हैं लेकिन इस से उम्मत ह़क़ीक़ी औलाद नहीं हो जाती और ह़क़ीक़ी औलाद के तमाम अह़काम विरासत वग़ैरा उस के लिये साबित नहीं होते। **105 :** या'नी आख़िरुल अम्बिया कि नुबुव्वत आप पर ख़त्म हो गई, आप की नुबुव्वत के बा'द किसी को नुबुव्वत नहीं मिल सकती ह़त्ता कि जब ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام नाज़िल होंगे तो अगर्चे नुबुव्वत पहले पा चुके हैं मगर नुज़ूल के बा'द शरीअ़ते मुह़म्मदिय्यह पर आ़मिल होंगे और इसी शरीअ़त पर हुक्म करेंगे और आप ही के क़िब्ले या'नी का'बए मुअ़ज़्ज़मा की त़रफ़ नमाज़ पढ़ेंगे। हुज़ूर का आख़िरुल अम्बिया होना क़त़ई है नस्से कुरआनी भी इस में वारिद है और सिह़ाह़ की ब कसरत अह़ादीस जो ह़द्दे तवातुर तक पहुंचती हैं, उन सब से साबित है कि हुज़ूर सब से पिछले नबी हैं, आप के बा'द कोई नबी होने वाला नहीं। जो हुज़ूर की नुबुव्वत के बा'द किसी और को नुबुव्वत मिलना मुम्किन जाने वोह ख़त्मे नुबुव्वत का मुन्किर और काफ़िर ख़ारिज अज़ इस्लाम है। **106 :** क्यूं कि सुब्ह़ और शाम के अवक़ात मलाइकए रोज़ो शब के जम्अ़ होने के वक़्त हैं। और येह भी कहा गया है कि अत़राफ़े लैलो नहार का ज़िक्र

www.dawateislami.net

لِيُخْرِجَكُمْ مِّنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ ؕ وَكَانَ بِالْمُؤْمِنِيْنَ رَحِيْمًا ﴿۴۳﴾

कि तुम्हें अंधेरियों से उजाले की तरफ़ निकाले[108] और वोह मुसल्मानों पर मेहरबान है

تَحِيَّتُهُمْ يَوْمَ يَلْقَوْنَهٗ سَلٰمٌ ۚۖ وَاَعَدَّ لَهُمْ اَجْرًا كَرِيْمًا ﴿۴۴﴾ يٰۤاَيُّهَا

उन के लिये मिलते वक़्त की दुआ़ सलाम है[109] और उन के लिये इ़ज़्ज़त का सवाब तय्यार कर रखा है ऐ ग़ैब की ख़बरें

النَّبِيُّ اِنَّاۤ اَرْسَلْنٰكَ شَاهِدًا وَّمُبَشِّرًا وَّنَذِيْرًا ﴿۴۵﴾ ۙ وَّدَاعِيًا اِلَى اللّٰهِ

बताने वाले (नबी) बेशक हम ने तुम्हें भेजा हाज़िर नाज़िर[110] और ख़ुश ख़बरी देता और डर सुनाता[111] और **अल्लाह** की तरफ़

بِاِذْنِهٖ وَسِرَاجًا مُّنِيْرًا ﴿۴۶﴾ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِيْنَ بِاَنَّ لَهُمْ مِّنَ اللّٰهِ فَضْلًا

उस के हुक्म से बुलाता[112] और चमका देने वाला आफ़्ताब[113] और ईमान वालों को ख़ुश ख़बरी दो कि उन के लिये **अल्लाह** का बड़ा

كَبِيْرًا ﴿۴۷﴾ وَلَا تُطِعِ الْكٰفِرِيْنَ وَالْمُنٰفِقِيْنَ وَدَعْ اَذٰىهُمْ وَتَوَكَّلْ عَلَى

फ़ज़्ल है और काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों की ख़ुशी न करो और उन की ईज़ा पर दर गुज़र फ़रमाओ[114] और **अल्लाह** पर

اللّٰهِ ؕ وَكَفٰى بِاللّٰهِ وَكِيْلًا ﴿۴۸﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِذَا نَكَحْتُمُ الْمُؤْمِنٰتِ

भरोसा करो और **अल्लाह** बस (काफ़ी) है कारसाज़ ऐ ईमान वालो जब तुम मुसल्मान औ़रतों से निकाह़ करो

करने से ज़िक्र की मुदावमत की त़रफ़ इशारा फ़रमाया गया है। **107 शाने नुज़ूल :** ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया कि जब आयत "اِنَّ اللّٰهَ وَمَلٰٓئِكَتَهٗ يُصَلُّوْنَ عَلَى النَّبِيِّ" नाज़िल हुई तो ह़ज़रते सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह ! صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْکَ وَسَلَّم जब आप को **अल्लाह** तआ़ला कोई फ़ज़्लो शरफ़ अ़ता फ़रमाता है तो हम नियाज़ मन्दों को भी आप के तुफ़ैल में नवाज़ता है, इस पर **अल्लाह** तआ़ला ने येह आयत नाज़िल फ़रमाई। **108 :** या'नी कुफ़्रो मा'सियत और नाख़ुदा शनासी की अंधेरियों से ह़क़ व हिदायत और मा'रिफ़त व ख़ुदा शनासी की रोशनी की त़रफ़ हिदायत फ़रमाए। **109 :** मिलते वक़्त से मुराद या मौत का वक़्त है या क़ब्रों से निकलने का या जन्नत में दाख़िल होने का। मरवी है कि ह़ज़रते मलकुल मौत عَلَیْہِ السَّلَام किसी मोमिन की रूह़ को सलाम किये बिग़ैर क़ब्ज़ नहीं फ़रमाते। ह़ज़रते इब्ने मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि जब मलकुल मौत मोमिन की रूह़ क़ब्ज़ करने आते हैं तो कहते हैं कि तेरा रब तुझे सलाम फ़रमाता है। और येह भी वारिद हुवा है कि मोमिनीन जब क़ब्रों से निकलेंगे तो मलाएका सलामती की बिशारत के त़ौर पर उन्हें सलाम करेंगे। (جمل وخازن) **110 :** शाहिद का तरजमा ह़ाज़िर व नाज़िर बहुत बेहतरीन तरजमा है, मुफ़रदाते राग़िब में है : "اَلشُّهُوْدُ وَالشَّهَادَةُ" "اَلْحُضُوْرُ مَعَ الْمُشَاهَدَةِ اِمَّا بِالْبَصَرِ اَوْ بِالْبَصِيْرَةِ" या'नी शुहूद और शहादत के मा'ना हैं ह़ाज़िर होना मअ़ नाज़िर होने के बसर के साथ हो या बसीरत के साथ और गवाह को भी इसी लिये शाहिद कहते हैं कि वोह मुशाहदे के साथ जो इ़ल्म रखता है उस को बयान करता है, सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم तमाम आ़लम की त़रफ़ मब्ऊ़स हैं, आप की रिसालत आ़म्मा है जैसा कि सूरए फ़ुरक़ान की पहली आयत में बयान हुवा तो हुज़ूर पुरनूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم क़ियामत तक होने वाली सारी ख़ल्क़ के शाहिद हैं और इन के आ'माल व अफ़्आ़ल व अह़्वाल, तस्दीक़, तक्ज़ीब, हिदायत, ज़लाल सब का मुशाहदा फ़रमाते हैं। (ابوالسعود وجمل) **111 :** या'नी ईमानदारों को जन्नत की ख़ुश ख़बरी और काफ़िरों को अ़ज़ाबे जहन्नम का डर सुनाता। **112 :** या'नी ख़ल्क़ को त़ाअ़ते इलाही की दा'वत देता। **113 :** सिराज का तरजमा आफ़्ताब क़ुरआने करीम के बिल्कुल मुत़ाबिक़ है कि इस में आफ़्ताब को सिराज फ़रमाया गया है। जैसा कि सूरए नूह़ में "وَجَعَلَ الشَّمْسَ سِرَاجًا" और आख़िर पारह की पहली सूरत में है "وَجَعَلْنَا سِرَاجًا وَّهَّاجًا" और दर ह़क़ीक़त हज़ारों आफ़्ताबों से ज़ियादा रोशनी आप के नूरे नुबुव्वत ने पहुंचाई और कुफ़्रो शिर्क के ज़ुल्माते शदीदा को अपने नूरे ह़क़ीक़त अफ़रोज़ से दूर कर दिया और ख़ल्क़ के लिये मा'रिफ़त व तौह़ीदे इलाही तक पहुंचने की राहें रोशन और वाज़ेह़ कर दीं और ज़लालत की वादिये तारीक में राह गुम करने वालों को अपने अन्वारे हिदायत से राहयाब फ़रमाया और अपने नूरे नुबुव्वत से ज़माइर व बसाइर और क़ुलूबो अरवाह़ को मुनव्वर किया। ह़क़ीक़त में आप का वुजूदे मुबारक ऐसा आफ़्ताबे आ़लम ताब है जिस ने हज़ारहा आफ़्ताब बना दिये, इसी लिये इस की सिफ़त में "मुनीर" इर्शाद फ़रमाया गया। **114 :** जब तक कि इस बारे में **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ से कोई हुक्म दिया जाए।

www.dawateislami.net

ثُمَّ طَلَّقْتُمُوْهُنَّ مِنْ قَبْلِ اَنْ تَمَسُّوْهُنَّ فَمَا لَكُمْ عَلَيْهِنَّ مِنْ عِدَّةٍ

फिर उन्हें बे हाथ लगाए छोड़ दो तो तुम्हारे लिये कुछ इद्दत नहीं

تَعْتَدُّوْنَهَا ۚ فَمَتِّعُوْهُنَّ وَسَرِّحُوْهُنَّ سَرَاحًا جَمِيْلًا ﴿۴۹﴾ يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ

जिसे गिनो[115] तो उन्हें कुछ फ़ाएदा दो[116] और अच्छी त़रह से छोड़ दो[117] ऐ ग़ैब बताने वाले (नबी)

اِنَّاۤ اَحْلَلْنَا لَكَ اَزْوَاجَكَ الّٰتِيْۤ اٰتَيْتَ اُجُوْرَهُنَّ وَمَا مَلَكَتْ يَمِيْنُكَ

हम ने तुम्हारे लिये ह़लाल फ़रमाई तुम्हारी वोह बीबियां जिन को तुम महर दो[118] और तुम्हारे हाथ का माल कनीज़ें

مِمَّاۤ اَفَآءَ اللّٰهُ عَلَيْكَ وَبَنٰتِ عَمِّكَ وَبَنٰتِ عَمّٰتِكَ وَبَنٰتِ خَالِكَ وَ

जो **अल्लाह** ने तुम्हें ग़नीमत में दीं[119] और तुम्हारे चचा की बेटियां और फुप्पियों की बेटियां और मामूं की बेटियां और

بَنٰتِ خٰلٰتِكَ الّٰتِيْ هَاجَرْنَ مَعَكَ ۫ وَامْرَاَةً مُّؤْمِنَةً اِنْ وَّهَبَتْ

ख़ालाओं की बेटियां जिन्हों ने तुम्हारे साथ हिजरत की[120] और ईमान वाली औ़रत अगर वोह अपनी जान

نَفْسَهَا لِلنَّبِيِّ اِنْ اَرَادَ النَّبِيُّ اَنْ يَّسْتَنْكِحَهَا ۗ خَالِصَةً لَّكَ مِنْ دُوْنِ

नबी की नज़्र करे अगर नबी उसे निकाह़ में लाना चाहे[121] येह ख़ास़ तुम्हारे लिये है उम्मत

الْمُؤْمِنِيْنَ ؕ قَدْ عَلِمْنَا مَا فَرَضْنَا عَلَيْهِمْ فِيْۤ اَزْوَاجِهِمْ وَمَا مَلَكَتْ

के लिये नहीं[122] हमें मा'लूम है जो हम ने मुसल्मानों पर मुक़र्रर किया है उन की बीबियों और उन के हाथ के

115 मस्अला : इस आयत से मा'लूम हुवा कि अगर औ़रत को क़ब्ल क़ुर्बत त़लाक़ दी तो उस पर इद्दत वाजिब नहीं। **मस्अला :** ख़ल्वते सह़ीह़ा क़ुर्बत के हुक्म में है तो अगर ख़ल्वते सह़ीह़ा के बा'द त़लाक़ वाक़ेअ़ हो तो इद्दत वाजिब होगी अगर्चे मुबाशरत (हम बिस्तरी) न हुई हो। **मस्अला :** येह हुक्म मोमिना और किताबिया दोनों को आ़म है लेकिन आयत में मोमिनात का ज़िक्र फ़रमाना इस त़रफ़ मुशीर (इशारा करता) है कि निकाह़ करना मोमिना से औला है। **116 मस्अला :** या'नी अगर उन का महर मुक़र्रर हो चुका था तो क़ब्ले ख़ल्वत त़लाक़ देने से शोहर पर निस्फ़ महर वाजिब होगा और अगर महर मुक़र्रर नहीं हुवा था तो एक जोड़ा देना वाजिब है जिस में तीन कपड़े होते हैं **117 :** अच्छी त़रह से छोड़ना येह है कि उन के ह़ुक़ूक़ अदा कर दिये जाएं और उन को कोई ज़रर न दिया जाए और उन्हें रोका न जाए क्यूं कि उन पर इद्दत नहीं है। **118 :** महर की ता'जील और अ़क़्द में तअ़य्युन अफ़्ज़ल है शर्त़े ह़िल्लत नहीं क्यूं कि महर को मुअ़ज्जल त़रीक़े पर देना या उस को मुक़र्रर करना औला और बेहतर है वाजिब नहीं। (تفسیر احمدی) **119 :** मिस्ल ह़ज़रते सफ़िय्या व ह़ज़रते जुवैरिया के जिन को सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने आज़ाद फ़रमाया और इन से निकाह़ किया। **मस्अला :** ग़नीमत में मिलने का ज़िक्र भी फ़ज़ीलत के लिये है क्यूं कि मम्लूकात ब मिल्के यमीन ख़्वाह ख़रीद से मिल्क में आई हों या हिबा से या विरासत से या वसिय्यत से वोह सब ह़लाल हैं। **120 :** साथ हिजरत करने की क़ैद भी अफ़्ज़ल का बयान है क्यूं कि बिग़ैर साथ हिजरत करने के भी इन में से हर एक ह़लाल है और येह भी हो सकता है कि ख़ास़ ह़ुज़ूर के ह़क़ में इन औ़रतों की ह़िल्लत इस क़ैद के साथ मुक़य्यद हो जैसा कि उम्मे हानी बिन्ते अबी त़ालिब की रिवायत इस त़रफ़ मुशीर है। **121 :** मा'ना येह हैं कि हम ने आप के लिये उस मोमिना औ़रत को ह़लाल किया जो बिग़ैर महर और बिग़ैर शुरूत़े निकाह़ अपनी जान आप को हिबा करे बशर्त़े कि आप उसे निकाह़ में लाने का इरादा फ़रमाएं। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि इस में आयिन्दा के हुक्म का बयान है क्यूं कि वक़्ते नुज़ूले आयत ह़ुज़ूर की अज़्वाज में से कोई भी ऐसी न थीं जो हिबा के ज़रीए से मुशर्रफ़ ब ज़ौजिय्यत हुई हों और जिन मोमिना बीबियों ने अपनी जानें ह़ुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को नज़्र कर दीं वोह मैमूना बिन्ते ह़ारिस और ख़ौला बिन्ते ह़कीम और उम्मे शरीक और ज़ैनब बिन्ते ख़ुज़ैमा हैं। (تفسیر احمدی) **122 :** या'नी निकाह़ बे महर ख़ास़ आप के लिये जाइज़ है

اَيْمَانُهُمْ لِكَيْلَا يَكُوْنَ عَلَيْكَ حَرَجٌ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿۵۰﴾

माल कनीज़ों में[123] येह ख़ुसूसिय्यत तुम्हारी[124] इस लिये कि तुम पर कोई तंगी न हो और **अल्लाह** बख़्शने वाला मेह्रबान

تُرْجِيْ مَنْ تَشَآءُ مِنْهُنَّ وَتُـْٔوِيْۤ اِلَيْكَ مَنْ تَشَآءُ ؕ وَمَنِ ابْتَغَيْتَ

पीछे हटाओ इन में से जिसे चाहो और अपने पास जगह दो जिसे चाहो[125] और जिसे तुम ने कनारे कर दिया था

مِمَّنْ عَزَلْتَ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكَ ؕ ذٰلِكَ اَدْنٰۤى اَنْ تَقَرَّ اَعْيُنُهُنَّ وَلَا

उसे तुम्हारा जी चाहे तो उस में भी तुम पर कुछ गुनाह नहीं[126] येह अम्र इस से नज़्दीक तर है कि उन की आंखें ठन्डी हों और

يَحْزَنَّ وَيَرْضَيْنَ بِمَاۤ اٰتَيْتَهُنَّ كُلُّهُنَّ ؕ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ مَا فِيْ قُلُوْبِكُمْ ؕ وَ

ग़म न करें और तुम उन्हें जो कुछ अ़ता फ़रमाओ इस पर वोह सब की सब राज़ी रहें[127] और **अल्लाह** जानता है जो तुम सब के दिलों में है और

كَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَلِيْمًا ﴿۵۱﴾ لَا يَحِلُّ لَكَ النِّسَآءُ مِنْۢ بَعْدُ وَلَاۤ اَنْ تَبَدَّلَ

अल्लाह इल्मो हिल्म वाला है इन के बा'द[128] और औ़रतें तुम्हें ह़लाल नहीं[129] और न येह कि इन के इवज़

بِهِنَّ مِنْ اَزْوَاجٍ وَّلَوْ اَعْجَبَكَ حُسْنُهُنَّ اِلَّا مَا مَلَكَتْ يَمِيْنُكَ ؕ وَ

और बीबियां बदलो[130] अगर्चे तुम्हें उन का हुस्न भाए मगर कनीज़ तुम्हारे हाथ का माल[131] और

उम्मत के लिये नहीं, उम्मत पर बहर ह़ाल मह्र वाजिब है ख़्वाह वोह मह्र मुअ़य्यन न करें या क़स्दन मह्र की नफ़ी करें। **मस्अला :** निकाह़ ब लफ़्ज़े हिबा जाइज़ है। **123 :** या'नी बीबियों के ह़क़ में जो कुछ मुक़र्रर फ़रमाया है मह्र और गवाह और बारी का वाजिब होना और चार हुर्रा औ़रतों तक को निकाह़ में लाना। **मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि शरअ़न मह्र की मिक़्दार **अल्लाह** तआ़ला के नज़्दीक मुक़र्रर है और वोह दस दिरहम हैं जिस से कम करना मम्नूअ़ है जैसा कि ह़दीस शरीफ़ में है। **124 :** जो ऊपर ज़िक्र हुई कि औ़रतें आप के लिये मह्ज़ हिबा से बिग़ैर मह्र के ह़लाल की गईं। **125 :** या'नी आप को इख़्तियार दिया गया है कि जिस बीबी को चाहें पास रखें और बीबियों में बारी मुक़र्रर करें या न करें। लेकिन बा वुजूद इस इख़्तियार के सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم तमाम अज़्वाजे मुत़ह्हरात के साथ अ़द्ल फ़रमाते और उन की बारियां बराबर रखते बजुज़ ह़ज़रते सौदह رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا के जिन्हों ने अपनी बारी का दिन ह़ज़रते उम्मुल मुअमिनीन आ़इशा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا को दे दिया था और बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ किया था कि मेरे लिये येही काफ़ी है कि मेरा ह़श्र आप की अज़्वाज में हो। ह़ज़रते आ़इशा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا से मरवी है कि येह आयत उन औ़रतों के ह़क़ में नाज़िल हुई जिन्हों ने अपनी जानें हुज़ूर को नज़्र कीं और हुज़ूर को इख़्तियार दिया गया कि इन में से जिस को चाहें क़बूल करें उस के साथ तज़व्वुज फ़रमाएं और जिस को चाहें इन्कार फ़रमा दें। **126 :** या'नी अज़्वाज में से आप ने जिस को मा'ज़ूल या साक़ित़ुल क़िस्मत कर दिया हो (बारी तर्क कर दी हो) आप जब चाहें उस की त़रफ़ इल्तिफ़ात फ़रमाएं और उस को नवाज़ें, इस का आप को इख़्तियार दिया गया है। **127 :** क्यूं कि जब वोह येह जानेंगी कि येह तफ़्वीज़ और येह इख़्तियार आप को **अल्लाह** की त़रफ़ से अ़ता हुवा है तो उन के क़ुलूब मुत़्मइन हो जाएंगे। **128 :** या'नी उन नव बीबियों के बा'द जो आप के निकाह़ में हैं जिन्हें आप ने इख़्तियार दिया तो उन्हों ने **अल्लाह** तआ़ला और रसूल को इख़्तियार किया। **129 :** क्यूं कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के लिये अज़्वाज का निसाब नव है जैसे कि उम्मत के लिये चार। **130 :** या'नी इन्हें त़लाक़ दे कर इन की जगह दूसरी औ़रतों से निकाह़ कर लो ऐसा भी न करो। येह एह़तिराम इन अज़्वाज का इस लिये है कि जब हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने इन्हें इख़्तियार दिया था तो इन्हों ने **अल्लाह** व रसूल को इख़्तियार किया और आसाइशे दुन्या को ठुकरा दिया, चुनान्चे रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने इन्हीं पर इक्तिफ़ा फ़रमाया और अख़ीर तक येही बीबियां हुज़ूर की ख़िदमत में रहीं। ह़ज़रते आ़इशा व उम्मे सलमा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا से मरवी है कि आख़िर में हुज़ूर के लिये ह़लाल कर दिया गया था कि जितनी औ़रतों से चाहें निकाह़ फ़रमाएं। इस तक़्दीर पर आयत मन्सूख़ है और इस का नासिख़ आयए ''اِنَّا اَحْلَلْنَا لَکَ اَزْوَاجَکَ'' الآیۃ है। **131 :** कि वोह तुम्हारे लिये ह़लाल है और इस के बा'द ह़ज़रत मारिया क़िब्त़िया हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की मिल्क में आईं और उन से हुज़ूर के फ़रज़न्द ह़ज़रते इब्राहीम पैदा हुए जिन्हों ने छोटी उ़म्र में वफ़ात पाई।

www.dawateislami.net

كَانَ اللّٰهُ عَلٰی كُلِّ شَیْءٍ رَّقِیْبًا ﴿۵۲﴾ یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا لَا تَدْخُلُوْا

अल्लाह हर चीज़ पर निगहबान है ऐ ईमान वालो नबी के घरों में[132]

بُیُوْتَ النَّبِیِّ اِلَّاۤ اَنْ یُّؤْذَنَ لَكُمْ اِلٰی طَعَامٍ غَیْرَ نٰظِرِیْنَ اِنٰىهُ ۙ وَ

न हाज़िर हो जब तक इज़्न न पाओ[133] मसलन खाने के लिये बुलाए जाओ न यूं कि ख़ुद उस के पकने की राह तको[134]

لٰكِنْ اِذَا دُعِیْتُمْ فَادْخُلُوْا فَاِذَا طَعِمْتُمْ فَانْتَشِرُوْا وَ لَا مُسْتَاْنِسِیْنَ

हां जब बुलाए जाओ तो हाज़िर हो और जब खा चुको तो मुतफ़र्रिक़ हो जाओ न येह कि बैठे बातों में

لِحَدِیْثٍ ؕ اِنَّ ذٰلِكُمْ كَانَ یُؤْذِی النَّبِیَّ فَیَسْتَحْیٖ مِنْكُمْ ٘ وَ اللّٰهُ لَا

दिल बहलाओ[135] बेशक इस में नबी को ईज़ा होती थी तो वोह तुम्हारा लिहाज़ फ़रमाते थे[136] और अल्लाह

یَسْتَحْیٖ مِنَ الْحَقِّ ؕ وَ اِذَا سَاَلْتُمُوْهُنَّ مَتَاعًا فَسْـَٔلُوْهُنَّ مِنْ وَّرَآءِ

हक़ फ़रमाने में नहीं शरमाता और जब तुम उन से[137] बरत्ने की कोई चीज़ मांगो तो पर्दे के

حِجَابٍ ؕ ذٰلِكُمْ اَطْهَرُ لِقُلُوْبِكُمْ وَ قُلُوْبِهِنَّ ؕ وَ مَا كَانَ لَكُمْ اَنْ تُؤْذُوْا

बाहर से मांगो इस में ज़ियादा सुथराई है तुम्हारे दिलों और उन के दिलों की[138] और तुम्हें नहीं पहुंचता कि

132 मस्अला : इस आयत से मा'लूम हुवा कि घर मर्द का होता है और इसी लिये इस से इजाज़त हासिल करना मुनासिब है। शोहर के घर को औरत का घर भी कहा जाता है इस लिहाज़ से कि वोह इस में सुकूनत का हक़ रखती है इस वज्ह से ''وَاذْكُرْنَ مَا يُتْلٰى فِىْ بُيُوْتِكُنَّ'' में घरों की निस्बत औरतों की तरफ़ की गई है। नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के मकानात जिन में हुज़ूर की अज़्वाजे मुतह्हरात की सुकूनत थी और हुज़ूर के पर्दा फ़रमाने के बा'द भी वोह अपनी हयात तक उन्हीं में रहीं वोह हुज़ूर की मिल्क थे और हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने अज़्वाजे ताहिरात को हिबा न फ़रमाए थे बल्कि सुकूनत की इजाज़त दी थी, इसी लिये अज़्वाजे मुतह्हरात की वफ़ात के बा'द उन के वारिसों को न मिले बल्कि मस्जिद शरीफ़ में दाख़िल कर दिये गए जो वक़्फ़ है और जिस का नफ़्अ तमाम मुसल्मानों के लिये आम है। **133 :** इस से मा'लूम हुवा कि औरतों पर पर्दा लाज़िम है और ग़ैर मर्दों को किसी घर में बे इजाज़त दाख़िल होना जाइज़ नहीं। आयत अगर्चे ख़ास अज़्वाजे रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के हक़ में वारिद है लेकिन हुक्म इस का तमाम मुसल्मान औरतों के लिये आम है। **शाने नुज़ूल :** जब सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने हज़रते ज़ैनब से निकाह किया और वलीमे की आम दा'वत फ़रमाई तो जमाअ़तों की जमाअ़तें आती थीं और खाने से फ़ारिग़ हो कर चली जाती थीं, आख़िर में तीन साहिब ऐसे थे जो खाने से फ़ारिग़ हो कर बैठे रह गए और उन्हों ने गुफ़्तगू का तवील सिल्सिला शुरूअ़ कर दिया और बहुत देर तक ठहरे रहे, मकान तंग था इस से घर वालों को तक्लीफ़ हुई और हरज हुवा कि वोह उन की वज्ह से अपना कामकाज कुछ न कर सके। रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم उठे और अज़्वाजे मुतह्हरात के हुजरों में तशरीफ़ ले गए और दौरा फ़रमा कर तशरीफ़ लाए, उस वक़्त तक येह लोग अपनी बातों में लगे हुए थे। हुज़ूर फिर वापस हो गए, येह देख कर वोह लोग रवाना हुए। तब हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم दौलत सराए में दाख़िल हुए और दरवाज़े पर पर्दा डाल दिया, इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई। इस से सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की कमाले हया और शाने करम व हुस्ने अख़्लाक़ मा'लूम होती है कि बा वुजूद ज़रूरत के अस्हाब से येह न फ़रमाया कि अब आप चले जाइये बल्कि जो तरीक़ा इख़्तियार फ़रमाया वोह हुस्ने अदब का आ'ला तरीन मुअ़ल्लिम है। **134 मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि बिग़ैर दा'वत किसी के यहां खाने न जाए। **135 :** कि येह अहले ख़ाना की तक्लीफ़ और उन के हरज का बाइस है। **136 :** और उन से चले जाने के लिये नहीं फ़रमाते थे। **137 :** या'नी अज़्वाजे मुतह्हरात से **138 :** कि वसाविस और ख़तरात से अम्न रहता है।

www.dawateislami.net

رَسُوْلَ اللّٰهِ وَلَاۤ اَنْ تَنْكِحُوْۤا اَزْوَاجَهٗ مِنْۢ بَعْدِهٖۤ اَبَدًا ؕ اِنَّ ذٰلِكُمْ

रसूलुल्लाह को ईज़ा दो[139] और न येह कि इन के बा'द कभी इन की बीबियों से निकाह़ करो[140] बेशक येह

كَانَ عِنْدَ اللّٰهِ عَظِيْمًا ﴿۵۳﴾ اِنْ تُبْدُوْا شَيْـًٔا اَوْ تُخْفُوْهُ فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ

अल्लाह के नज़्दीक बड़ी सख़्त बात है[141] अगर तुम कोई बात ज़ाहिर करो या छुपाओ तो बेशक **अल्लाह** सब

بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمًا ﴿۵۴﴾ لَا جُنَاحَ عَلَيْهِنَّ فِيْۤ اٰبَآىِٕهِنَّ وَلَاۤ اَبْنَآىِٕهِنَّ وَ

कुछ जानता है उन पर मुज़ायक़ा नहीं[142] उन के बाप और बेटों और

لَاۤ اِخْوَانِهِنَّ وَلَاۤ اَبْنَآءِ اِخْوَانِهِنَّ وَلَاۤ اَبْنَآءِ اَخَوٰتِهِنَّ وَلَا نِسَآىِٕهِنَّ

भाइयों और भतीजों और भान्जों[143] और अपने दीन की औ़रतों[144]

وَلَا مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُهُنَّ ۚ وَاتَّقِيْنَ اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ

और अपनी कनीज़ों में[145] और **अल्लाह** से डरती रहो बेशक हर चीज़ **अल्लाह** के

شَهِيْدًا ﴿۵۵﴾ اِنَّ اللّٰهَ وَمَلٰٓىِٕكَتَهٗ يُصَلُّوْنَ عَلَى النَّبِيِّ ؕ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ

सामने है बेशक **अल्लाह** और उस के फ़िरिश्ते दुरूद भेजते हैं उस ग़ैब बताने वाले (नबी) पर ऐ ईमान वालो

اٰمَنُوْا صَلُّوْا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا ﴿۵۶﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ يُؤْذُوْنَ اللّٰهَ وَ

उन पर दुरूद और ख़ूब सलाम भेजो[146] बेशक जो ईज़ा देते हैं **अल्लाह** और

139 : और कोई काम ऐसा न करो जो ख़ातिरे अक़्दस पर गिरां हो। **140 :** क्यूं कि जिस औ़रत से रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने अ़क़्द फ़रमाया वोह हुज़ूर के सिवा हर शख़्स पर हमेशा के लिये ह़राम हो गई, इसी त़रह़ वोह कनीज़ें जो बारयाबे ख़िदमत हुईं और क़ुर्बत से सरफ़राज़ फ़रमाई गईं वोह भी इसी त़रह़ सब के लिये ह़राम हैं। **141 :** इस में ए'लाम है कि **अल्लाह** तआ़ला ने अपने ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को बहुत बड़ी अ़ज़मत अ़त़ा फ़रमाई और आप की हुरमत हर ह़ाल में वाजिब की। **142 :** या'नी उन बीबियों पर कुछ गुनाह नहीं इस में कि वोह उन लोगों से पर्दा न करें जिन का आयत में आगे ज़िक्र फ़रमाया जाता है। **शाने नुज़ूल :** जब पर्दे का हुक्म नाज़िल हुवा तो औ़रतों के बाप बेटों और क़रीब के रिश्तेदारों ने रसूले करीम (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) की ख़िदमत में अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم क्या हम अपनी माओं बेटियों के साथ पर्दे के बाहर से गुफ़्तगू करें ? इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई। **143 :** या'नी इन अक़ारिब के सामने आने और इन से कलाम करने में कोई ह़रज नहीं। **144 :** या'नी मुसल्मान बीबियों के सामने आना जाइज़ है और काफ़िरा औ़रतों से पर्दा करना और अपने जिस्म छुपाना लाज़िम है सिवाए जिस्म के उन ह़िस्सों के जो घर के कामकाज के लिये खोलने ज़रूरी होते हैं। (جمل) **145 :** यहां चचा और मामूं का सराह़तन ज़िक्र नहीं किया गया क्यूं कि वोह वालिदैन के हुक्म में हैं। **146 :** सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم पर दुरूदो सलाम भेजना वाजिब है, हर एक मजलिस में आप का ज़िक्र करने वाले पर भी और सुनने वाले पर भी एक मरतबा और इस से ज़ियादा मुस्तह़ब है येही क़ौल मो'तमद है और इस पर जुम्हूर हैं और नमाज़ के क़ा'दए अख़ीरा में बा'दे तशह्हुद दुरूद शरीफ़ पढ़ना सुन्नत है और आप के ताबेअ़ कर के आप के आल व अस्ह़ाब व दूसरे मोमिनीन पर भी दुरूद भेजा जा सकता है या'नी दुरूद शरीफ़ में आप के नामे अक़्दस के बा'द उन को शामिल किया जा सकता है और मुस्तक़िल त़ौर पर हुज़ूर के सिवा इन में से किसी पर दुरूद भेजना मक्रूह है। **मस्अला :** दुरूद शरीफ़ में आल व अस्ह़ाब का ज़िक्र मुतवारिस है और येह भी कहा गया है कि आल के ज़िक्र के बिग़ैर मक़्बूल नहीं। दुरूद शरीफ़ **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ से नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की तकरीम है। उ़लमा ने ''اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ'' के मा'ना येह बयान किये हैं कि या रब मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को अ़ज़मत अ़त़ा फ़रमा, दुन्या में इन का दीन बुलन्द और इन की दा'वत ग़ालिब फ़रमा कर और

www.dawateislami.net

رَسُوْلَهٗ لَعَنَهُمُ اللّٰهُ فِی الدُّنْیَا وَ الْاٰخِرَةِ وَ اَعَدَّ لَهُمْ عَذَابًا مُّهِیْنًا ﴿۵۷﴾ وَ

उस के रसूल को उन पर **अल्लाह** की ला'नत है दुन्या और आख़िरत में[147] और **अल्लाह** ने उन के लिये ज़िल्लत का अ़ज़ाब तय्यार कर रखा है[148] और

الَّذِیْنَ یُؤْذُوْنَ الْمُؤْمِنِیْنَ وَ الْمُؤْمِنٰتِ بِغَیْرِ مَا اكْتَسَبُوْا فَقَدِ

जो ईमान वाले मर्दों और औ़रतों को बे किये सताते हैं उन्हों

احْتَمَلُوْا بُهْتَانًا وَّ اِثْمًا مُّبِیْنًا ﴿۵۸﴾ یٰۤاَیُّهَا النَّبِیُّ قُلْ لِّاَزْوَاجِكَ وَ

ने बोहतान और खुला गुनाह अपने सर लिया[149] ऐ नबी अपनी बीबियों और साहिब ज़ादियों

بَنٰتِكَ وَ نِسَآءِ الْمُؤْمِنِیْنَ یُدْنِیْنَ عَلَیْهِنَّ مِنْ جَلَابِیْبِهِنَّ ؕ ذٰلِكَ

और मुसल्मानों की औ़रतों से फ़रमा दो कि अपनी चादरों का एक हिस्सा अपने मुंह पर डाले रहें[150] येह इस से

اَدْنٰۤى اَنْ یُّعْرَفْنَ فَلَا یُؤْذَیْنَ ؕ وَ كَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِیْمًا ﴿۵۹﴾ لَىٕنْ

नज़्दीक तर है कि उन की पहचान हो[151] तो सताई न जाएं[152] और **अल्लाह** बख़्शने वाला मेहरबान है अगर

لَّمْ یَنْتَهِ الْمُنٰفِقُوْنَ وَ الَّذِیْنَ فِیْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ وَّ الْمُرْجِفُوْنَ فِی

बाज़ न आए मुनाफ़िक़[153] और जिन के दिलों में रोग है[154] और मदीने में झूट

الْمَدِیْنَةِ لَنُغْرِیَنَّكَ بِهِمْ ثُمَّ لَا یُجَاوِرُوْنَكَ فِیْهَاۤ اِلَّا قَلِیْلًا ﴿۶۰﴾

उड़ाने वाले[155] तो ज़रूर हम तुम्हें उन पर शह (हौसला) देंगे[156] फिर वोह मदीने में तुम्हारे पास न रहेंगे मगर थोड़े दिन[157]

इन की शरीअ़त को बक़ा इनायत कर के और आख़िरत में इन की शफ़ाअ़त क़बूल फ़रमा कर और इन का सवाब ज़ियादा कर के और अव्वलीन व आख़िरीन पर इन की फ़ज़ीलत का इज़्हार फ़रमा कर और अम्बिया, मुर्सलीन व मलाएका और तमाम ख़ल्क़ पर इन की शान बुलन्द कर के। **मस्अला :** दुरूद शरीफ़ की बहुत बरकतें और फ़ज़ीलतें हैं हदीस शरीफ़ में है : सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि जब दुरूद भेजने वाला मुझ पर दुरूद भेजता है तो फ़िरिश्ते उस के लिये दुआ़ए मग़्फ़िरत करते हैं। मुस्लिम की हदीस शरीफ़ में है : जो मुझ पर एक बार दुरूद भेजता है **अल्लाह** तआ़ला उस पर दस बार भेजता है। तिरमिज़ी की हदीस शरीफ़ में है : बख़ील वोह है जिस के सामने मेरा ज़िक्र किया जाए और वोह दुरूद न भेजे। **147 :** वोह ईज़ा देने वाले कुफ़्फ़ार हैं जो शाने इलाही में ऐसी बातें कहते हैं जिन से वोह मुनज़्ज़ा और पाक है और रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की तक्ज़ीब करते हैं उन पर दारैन में ला'नत। **148 :** आख़िरत में। **149 शाने नुज़ूल :** येह आयत उन मुनाफ़िक़ीन के हक़ में नाज़िल हुई जो हज़रत अ़लिय्ये मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه को ईज़ा देते थे और उन के हक़ में बदगोई करते थे। हज़रते फ़ुज़ैल ने फ़रमाया कि कुत्ते और सुवर को भी नाहक़ ईज़ा देना हलाल नहीं तो मोमिनीन व मोमिनात को ईज़ा देना किस क़दर बद तरीन जुर्म है। **150 :** और सर और चेहरे को छुपाएं जब किसी हाजत के लिये उन को निकलना हो। **151 :** कि येह हुर्रा (आज़ाद) हैं। **152 :** और मुनाफ़िक़ीन उन के दरपै न हों। मुनाफ़िक़ीन की आदत थी कि वोह बांदियों को छेड़ा करते थे। इस लिये हुर्रा औ़रतों को हुक्म दिया कि वोह चादर से जिस्म ढांक कर सर और मुंह छुपा कर बांदियों से अपनी वज़्अ़ मुमताज़ कर दें। **153 :** अपने निफ़ाक़ से **154 :** और जो बुरे ख़याल रखते हैं या'नी फ़ाजिर बदकार हैं वोह अगर अपनी बदकारी से बाज़ न आए **155 :** जो इस्लामी लश्करों के मुतअ़ल्लिक़ झूटी ख़बरें उड़ाया करते थे और येह मश्हूर किया करते थे कि मुसल्मानों को हज़ीमत हो गई, वोह क़त्ल कर डाले गए, दुश्मन चढ़ा चला आ रहा है औ इस से उन का मक़्सद मुसल्मानों की दिल शिकनी और उन को परेशानी में डालना होता था। उन लोगों के मुतअ़ल्लिक़ इर्शाद फ़रमाया जाता है कि अगर वोह इन हरकात से बाज़ न आए **156 :** और तुम्हें उन पर मुसल्लत् करेंगे। **157 :** फिर मदीनए तृय्यिबा उन से ख़ाली करा लिया जाएगा और वहां से निकाल दिये जाएंगे।

www.dawateislami.net

مَّلْعُوْنِيْنَ ۚۛ اَيْنَمَا ثُقِفُوْۤا اُخِذُوْا وَ قُتِّلُوْا تَقْتِيْلًا ﴿۶۱﴾ سُنَّةَ اللّٰهِ فِی معانقة ١٣

फिटकारे हुए जहां कहीं मिलें पकड़े जाएं और गिन गिन कर क़त्ल किये जाएं **अल्लाह** का दस्तूर चला आता है उन

الَّذِيْنَ خَلَوْا مِنْ قَبْلُ ۚ وَ لَنْ تَجِدَ لِسُنَّةِ اللّٰهِ تَبْدِيْلًا ﴿۶۲﴾ يَسْـَٔلُكَ الربع

लोगों में जो पहले गुज़र गए[158] और तुम **अल्लाह** का दस्तूर हरगिज़ बदलता न पाओगे लोग तुम से

النَّاسُ عَنِ السَّاعَةِ ؕ قُلْ اِنَّمَا عِلْمُهَا عِنْدَ اللّٰهِ ؕ وَ مَا يُدْرِيْكَ لَعَلَّ

क़ियामत को पूछते हैं[159] तुम फ़रमाओ इस का इल्म तो **अल्लाह** ही के पास है और तुम क्या जानो

السَّاعَةَ تَكُوْنُ قَرِيْبًا ﴿۶۳﴾ اِنَّ اللّٰهَ لَعَنَ الْكٰفِرِيْنَ وَ اَعَدَّ لَهُمْ سَعِيْرًا ﴿۶۴﴾ۙ

शायद क़ियामत पास ही हो[160] बेशक **अल्लाह** ने काफ़िरों पर ला'नत फ़रमाई और उन के लिये भड़क्ती आग तय्यार कर रखी है

خٰلِدِيْنَ فِيْهَاۤ اَبَدًا ۚ لَا يَجِدُوْنَ وَلِيًّا وَّ لَا نَصِيْرًا ﴿۶۵﴾ۚ يَوْمَ تُقَلَّبُ

उस में हमेशा रहेंगे उस में न कोई हिमायती पाएंगे न मददगार[161] जिस दिन उन के मुंह उलट उलट

وُجُوْهُهُمْ فِی النَّارِ يَقُوْلُوْنَ يٰلَيْتَنَاۤ اَطَعْنَا اللّٰهَ وَ اَطَعْنَا الرَّسُوْلَا ﴿۶۶﴾ وَ

कर आग में तले जाएंगे कहते होंगे हाए किसी त़रह हम ने **अल्लाह** का हुक्म माना होता और रसूल का हुक्म माना होता[162] और

قَالُوْا رَبَّنَاۤ اِنَّاۤ اَطَعْنَا سَادَتَنَا وَ كُبَرَآءَنَا فَاَضَلُّوْنَا السَّبِيْلَا ﴿۶۷﴾ رَبَّنَاۤ

कहेंगे ऐ हमारे रब हम अपने सरदारों और अपने बड़ों के कहने पर चले[163] तो उन्हों ने हमें राह से बहका दिया ऐ हमारे रब

اٰتِهِمْ ضِعْفَيْنِ مِنَ الْعَذَابِ وَ الْعَنْهُمْ لَعْنًا كَبِيْرًا ﴿۶۸﴾ؑ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ ع ٨/٥

उन्हें आग का दूना (दुगना) अ़ज़ाब दे[164] और उन पर बड़ी ला'नत कर ऐ ईमान

اٰمَنُوْا لَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ اٰذَوْا مُوْسٰى فَبَرَّاَهُ اللّٰهُ مِمَّا قَالُوْا ؕ وَ كَانَ

वालो[165] उन जैसे न होना जिन्हों ने मूसा को सताया[166] तो **अल्लाह** ने उसे बरी फ़रमा दिया उस बात से जो उन्हों ने कही[167] और मूसा

158 : या'नी पहली उम्मतों के मुनाफ़िक़ीन जो ऐसी ह़रकात करते थे उन के लिये भी सुन्नते इलाहिय्यह येही रही कि जहां पाए जाएं मार डाले जाएं। **159 :** कि कब क़ाइम होगी। **शाने नुज़ूल :** मुश्रिकीन तो तमस्ख़ुर व इस्तिह्ज़ा के त़ौर पर रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم से क़ियामत का वक़्त दरयाफ़्त किया करते थे गोया उन को बहुत जल्दी है और यहूद इस को इम्तिह़ानन पूछते थे क्यूं कि तौरैत में इस का इल्म मख़्फ़ी रखा गया था तो **अल्लाह** तआ़ला ने अपने नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को हुक्म फ़रमाया : **160 :** इस में जल्द करने वालों को तहदीद और इम्तिह़ानन सुवाल करने वालों को इस्कात (चुप कराना) और उन की दहन दोज़ी (मुंह बन्द करना) है। **161 :** जो उन्हें अ़ज़ाब से बचा सके। **162 :** दुन्या में, तो हम आज इस अ़ज़ाब में गिरिफ़्तार न होते। **163 :** या'नी क़ौम के सरदारों और बड़ी उम्र के लोगों और अपनी जमाअ़त के आ़लिमों के, उन्हों ने हमें कुफ़्र की तल्क़ीन की। **164 :** क्यूं कि वोह ख़ुद भी गुमराह हुए और उन्हों ने दूसरों को भी गुमराह किया। **165 :** नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم का अदबो एह़तिराम बजा लाओ और कोई काम ऐसा न करना जो उन के रन्जो मलाल का बाइस हो और **166 :** या'नी उन बनी इसराईल की त़रह न होना जो नंगे नहाते थे और ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام पर त़ा'न करते थे कि ह़ज़रत हमारे साथ क्यूं नहीं नहाते

www.dawateislami.net

عِنْدَ اللّٰهِ وَجِيْهًا ﴿٦٩﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَقُوْلُوْا قَوْلًا

अल्लाह के यहां आबरू वाला है[168] ऐ ईमान वालो अल्लाह से डरो और सीधी बात

سَدِيْدًا ﴿٧٠﴾ يُّصْلِحْ لَكُمْ اَعْمَالَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوْبَكُمْ ؕ وَمَنْ يُّطِعِ

कहो[169] तुम्हारे आ'माल तुम्हारे लिये संवार देगा[170] और तुम्हारे गुनाह बख़्श देगा और जो अल्लाह और

اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ فَقَدْ فَازَ فَوْزًا عَظِيْمًا ﴿٧١﴾ اِنَّا عَرَضْنَا الْاَمَانَةَ عَلَى

उस के रसूल की फ़रमां बरदारी करे उस ने बड़ी काम्याबी पाई बेशक हम ने अमानत पेश फ़रमाई[171]

السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَالْجِبَالِ فَاَبَيْنَ اَنْ يَّحْمِلْنَهَا وَاَشْفَقْنَ مِنْهَا

आस्मानों और ज़मीन और पहाड़ों पर तो उन्हों ने उस के उठाने से इन्कार किया और उस से डर गए[172]

وَحَمَلَهَا الْاِنْسَانُ ؕ اِنَّهٗ كَانَ ظَلُوْمًا جَهُوْلًا ﴿٧٢﴾ لِّيُعَذِّبَ اللّٰهُ الْمُنٰفِقِيْنَ

और आदमी ने उठा ली बेशक वोह अपनी जान को मशक़्क़त में डालने वाला बड़ा नादान है ताकि अल्लाह अ़ज़ाब दे मुनाफ़िक़ मर्दों

وَالْمُنٰفِقٰتِ وَالْمُشْرِكِيْنَ وَالْمُشْرِكٰتِ وَيَتُوْبَ اللّٰهُ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ

और मुनाफ़िक़ औ़रतों और मुश्रिक मर्दों और मुश्रिक औ़रतों को[173] और अल्लाह तौबा क़बूल फ़रमाए मुसल्मान मर्दों

उन्हें बरस वग़ैरा की कोई बीमारी है। **167 :** इस त़रह़ कि जब एक रोज़ ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने ग़ुस्ल के लिये एक तन्हाई की जगह में पथ्थर पर कपड़े उतार कर रखे और ग़ुस्ल शुरूअ़ किया तो पथ्थर आप के कपड़े ले कर भागा, आप कपड़े लेने के लिये उस की त़रफ़ बढ़े तो बनी इस्राईल ने देख लिया कि जिस्मे मुबारक पर कोई दाग़ और कोई ऐ़ब नहीं है। **168 :** साह़िबे जाह और साह़िबे मन्ज़िलत और मुस्तजाबुद्दा'वात। **169 :** या'नी सच्ची और दुरुस्त ह़क़ व इन्साफ़ की और अपनी ज़बान और कलाम की ह़िफ़ाज़त रखो। येह भलाइयों की अस्ल है, ऐसा करोगे तो अल्लाह तआ़ला तुम पर करम फ़रमाएगा और **170 :** तुम्हें नेकियों की तौफ़ीक़ देगा और तुम्हारी त़ाअ़तें क़बूल फ़रमाएगा। **171 :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि अमानत से मुराद त़ाअ़त व फ़राइज़ हैं जिन्हें अल्लाह तआ़ला ने अपने बन्दों पर पेश किया। इन्हीं को आस्मानों, ज़मीनों, पहाड़ों पर पेश किया था कि अगर वोह इन्हें अदा करेंगे तो सवाब दिये जाएंगे न अदा करेंगे तो अ़ज़ाब किये जाएंगे। ह़ज़रते इब्ने मस्ऊ़द رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने फ़रमाया कि अमानत नमाज़ें अदा करना, ज़कात देना, रमज़ान के रोज़े रखना, ख़ानए का'बा का ह़ज, सच बोलना, नाप और तोल में और लोगों की वदीअ़तों में अ़द्ल करना है। बा'ज़ों ने कहा कि अमानत से मुराद वोह तमाम चीज़ें हैं जिन का हुक्म दिया गया और जिन की मुमानअ़त की गई। ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन आ़स ने फ़रमाया कि तमाम आ'ज़ा कान हाथ पाउं वग़ैरा सब अमानत हैं, उस का ईमान ही क्या जो अमानत दार न हो। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि अमानत से मुराद लोगों की वदीअ़तें और अ़ह्दों का पूरा करना है तो हर मोमिन पर फ़र्ज़ है कि न किसी मोमिन की ख़ियानत करे न काफ़िर मुआ़हिद की, न क़लील में न कसीर में। अल्लाह तआ़ला ने येह अमानत आ'याने समावातो अर्द़ व जिबाल (आस्मान व ज़मीन और पहाड़ों) पर पेश फ़रमाई फिर उन से फ़रमाया : क्या तुम इन अमानतों को मअ़ इस की ज़िम्मेदारी के उठाओगे ? उन्हों ने अ़र्ज़ किया : ज़िम्मेदारी क्या है ? फ़रमाया : येह कि अगर तुम इन्हें अच्छी त़रह़ अदा करो तो तुम्हें जज़ा दी जाएगी और अगर ना फ़रमानी करो तो तुम्हें अ़ज़ाब किया जाएगा। उन्हों ने अ़र्ज़ किया : नहीं, ऐ रब ! हम तेरे हुक्म के मुत़ीअ़ हैं, न सवाब चाहें न अ़ज़ाब। और उन का येह अ़र्ज़ करना बराहे ख़ौफ़ो ख़शिय्यत था और अमानत बत़ौरे तख़्यीर पेश की गई थी या'नी उन्हें इख़्तियार दिया गया था कि अपने में क़ुव्वत व हिम्मत पाएं तो उठाएं वरना मा'ज़िरत कर दें, इस का उठाना लाज़िम नहीं किया गया था और अगर लाज़िम किया जाता तो वोह इन्कार न करते। **172 :** कि अगर अदा न कर सके तो अ़ज़ाब किये जाएंगे। तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने वोह अमानत आदम عَلَيْهِ السَّلَام के सामने पेश की और फ़रमाया कि मैं ने आस्मानों और ज़मीनों और पहाड़ों पर पेश की थी वोह न उठा सके, क्या तू मअ़ इस की ज़िम्मेदारी के उठा सकेगा ? ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام ने इक़रार किया। **173 :** कहा गया है कि मा'ना येह हैं कि हम ने अमानत पेश की ताकि मुनाफ़िक़ीन का निफ़ाक़ और मुश्रिकीन का

www.dawateislami.net

وَالْمُؤْمِنٰتِ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿٧٣﴾

और मुसल्मान औ़रतों की और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है

ايَاتُهَا ٥٤ ﴿٣٤﴾ سُوْرَةُ سَبَاٍ مَّكِّيَّةٌ ﴿٥٨﴾ رُكُوْعَاتُهَا ٦

सूरए सबा मक्किय्या है, इस में चव्वन आयतें और छ[6] रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़म वाला[1]

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ وَلَهُ الْحَمْدُ فِي

सब ख़ूबियां अल्लाह को कि उसी का माल है जो कुछ आस्मानों में है और जो कुछ ज़मीन में[2] और आख़िरत में उसी की

الْاٰخِرَةِ ؕ وَهُوَ الْحَكِيْمُ الْخَبِيْرُ ﴿١﴾ يَعْلَمُ مَا يَلِجُ فِي الْاَرْضِ وَمَا

ता'रीफ़ है[3] और वोही हिक्मत वाला ख़बरदार जानता है जो कुछ ज़मीन में जाता है[4] और जो

يَخْرُجُ مِنْهَا وَمَا يَنْزِلُ مِنَ السَّمَآءِ وَمَا يَعْرُجُ فِيْهَا ؕ وَهُوَ الرَّحِيْمُ

ज़मीन से निकलता है[5] और जो आस्मान से उतरता है[6] और जो उस में चढ़ता है[7] और वोही है मेहरबान

الْغَفُوْرُ ﴿٢﴾ وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَا تَاْتِيْنَا السَّاعَةُ ؕ قُلْ بَلٰى وَرَبِّيْ

बख़्शिश वाला और काफ़िर बोले हम पर क़ियामत न आएगी[8] तुम फ़रमाओ क्यूं नहीं मेरे रब की क़सम

لَتَاْتِيَنَّكُمْ ۙ عٰلِمِ الْغَيْبِ ۚ لَا يَعْزُبُ عَنْهُ مِثْقَالُ ذَرَّةٍ فِي السَّمٰوٰتِ

बेशक ज़रूर तुम पर आएगी ग़ैब जानने वाला[9] उस से ग़ाइब नहीं ज़र्रा भर कोई चीज़ आस्मानों में

शिर्क ज़ाहिर हो और अल्लाह तआ़ला उन्हें अ़ज़ाब फ़रमाए और मोमिनीन जो अमानत के अदा करने वाले हैं उन के ईमान का इज़्हार हो और अल्लाह तबारक व तआ़ला उन की तौबा क़बूल फ़रमाए और उन पर रह़मत व मग़्फ़िरत करे अगर्चे उन से बा'ज़ त़ाआ़त में कुछ तक़्सीर भी हुई हो। (خازن) 1 : सूरए सबा मक्की है सिवाए आयत "وَيَرَى الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ" इस में छ[6] रुकूअ़, चव्वन आयतें और आठ सो तेंतीस कलिमे, एक हज़ार पांच सो बारह ह़र्फ़ हैं। 2 : या'नी हर चीज़ का मालिक ख़ालिक़ और ह़ाकिम अल्लाह तआ़ला है और हर ने'मत उसी की त़रफ़ से है तो वोही ह़म्दो सना का मुस्तह़िक़ और सज़ावार है 3 : या'नी जैसा दुन्या में ह़म्द का मुस्तह़िक़ अल्लाह तआ़ला है वैसा ही आख़िरत में भी ह़म्द का मुस्तह़िक़ वोही है क्यूं कि दोनों जहान उसी की ने'मतों से भरे हुए हैं, दुन्या में तो बन्दों पर उस की ह़म्दो सना वाजिब है क्यूं कि येह दारुत्तक्लीफ़ है और आख़िरत में अहले जन्नत ने'मतों के सुरूर और राह़तों की ख़ुशी में उस की ह़म्द करेंगे। 4 : या'नी ज़मीन के अन्दर दाख़िल होता है जैसे कि बारिश का पानी और मुर्दे और दफ़ीने 5 : जैसे कि सब्ज़ा और दरख़्त और चश्मे और कानें और ब वक़्ते ह़श्र मुर्दे 6 : जैसे कि बारिश, बर्फ़, ओले, और त़रह़ त़रह़ की बरकतें और फ़िरिश्ते 7 : जैसे कि फ़िरिश्ते और दुआएं और बन्दों के अ़मल 8 : या'नी उन्हों ने क़ियामत के आने का इन्कार किया। 9 : या'नी मेरा रब ग़ैब का जानने वाला है उस से कोई चीज़ मख़्फ़ी नहीं तो क़ियामत का आना और उस के क़ाइम होने का वक़्त भी उस के इ़ल्म में है।

www.dawateislami.net